आर्योदय विशेषांक

एवं

यूथ मैगज़ीन

आर्य सभा मॉरीशस

२०१७

Aryodaye No. 367 *cum* Youth Magazine Vol. 10
June 2017

ARYA SABHA MAURITIUS & ARYA YUVAK SANGH

विषय-सूची

Contents

	पृष्ठ/Page
Dr O.N. Gangoo - Aghamarshana Mantrah	1
डॉ० उदयनारायण गंगू - श्री अभयदेव रामरूप न रहे	1
श्री बालचन्द तानाकूर - भारत सरकार की उदारता	2
श्री सत्यदेव प्रीतम - सत्यार्थप्रकाश मास के परिप्रेक्ष्य में	3
पंडित राजमन रामसाहा - दिवस-काल	3-4
पंडिता अंजनी महिपथ - गृहस्थी का उत्तरदायित्व	4-5
पंडित धर्मेन्द्र रिकाई - संन्यासी की स्थिति	5
श्री एस. प्रीतम - आर्यभवन में सत्यार्थप्रकाश मास का औपचारिक उद्घाटन	6
श्री विष्णुदेव बिसेसर - पिता का मार्ग-दर्शन	6-7
श्री जयपति पुनीत - मत करो जो मैं करता हूँ, वह करो जो कहता हूँ	7-8
श्रीमती भगवन्ती घूरा - मातृ शक्ति की महिमा	8
डॉ० विनय सितिजोरी - स्कूल का एक मेधावी छात्र - बाबा रामदेव जी	9
Shri Sookraj Bissessur - When Kindness Pays	10
Youth Magazine	
Mr Dharamveer Gangoo - Success	11
Mr Sarwanand Nowlotha - Never Fear to Bring to Reason	11-12
Mrs Luchanah Vanisha - Giving Vedic Culture to the Next Generation	12
Mr Avinash (Yogesh) Hurdoyal - Our Education System	13
Mr Yaadav Damree	14
Mr Satyadev Peerthum	14
The National Youth Day Celebrations 2017	15
Yogi Bramdeo Mokoonlall	16-17
पंडिता चन्द्रिका राजू - गायत्री महायज्ञ	17-18
डॉ० विनय सितिजोरी - वैदिक धर्म किसका है ?	19
श्रीमती प्रेमदा लीलकन्त - पेची वेरज़े सेंपियेर में नारी-सम्मेलन	20-21
विष्णुदेव बिसेसर - ओ३म्-ध्वज का महत्व	21-22
श्री एस. प्रीतम - पारिवारिक यज्ञ	22
Mrs Reshma Sookar - Pailles Arya Samaj - Satyartha Prakash Month Sunday 25 June 2017	23
श्री ब. तानाकूर - जीवन-यात्रा	24
डॉ० उदय नारायण गंगू - बधाई एवं कोटिशः धन्यवाद	25
श्री एस. प्रीतम - डॉ० चिरंजीव भारद्वाज आश्रम का शिलान्यास	26

आर्योदय
ARYODAYE
Arya Sabha Mauritius

1,Maharshi Dayanand St., Port Louis,
Tel : 212-2730, 208-7504,
Fax : 210-3778,
Email : aryamu@intnet.mu
www.aryasabhamauritius.mu

प्रधान सम्पादक - Chief Editor :

डॉ० उदय नारायण गंगू,
पी.एच.डी., ओ.एस.के., जी.ओ.एस.के., आर्य रत्न
Dr Oudaye Narain Gangoo, *Ph.D, O.S.K, G.O.S.K, Arya Ratna*

सह सम्पादक - Editor :

श्री सत्यदेव प्रीतम, *बी.ए., ओ.एस.के, सी.एस.के., आर्य रत्न*
Shri Satyadeo Peerthum, *B.A, O.S.K, C.S.K., Arya Ratna*

सम्पादक मण्डल - Editorial Team :

(१) डॉ० जयचन्द लालबिहारी, *पी.एच.डी, आर्य भूषण*
Dr Jaychand Lallbeeharry, *Ph.D, Arya Bhooshan*

(२) श्री बालचन्द तानाकूर, *पी.एम.एस.एम, आर्य रत्न*
Shri Balchand Tanakoor, *P.M.S.M, Arya Ratna*

(३) श्री नरेन्द्र घूरा,*पी.एम.एस.एम, आर्य भूषण*
Shri Naraindra Ghoorah, *P.M.S.M, Arya Bhooshan*

(४) प्रोफ़ेसर सुदर्शन जगेसर, *डी.एस.सी, जी.ओ.एस.के., आर्य भूषण*
Prof. Soodursun Jugessur, D.Sc, G.O.S.K, *Arya Bhooshan*

(५) योगी ब्रह्मदेव मुकुन्दलाल, *दर्शनाचार्य*
Yogi Bramdeo Mokoonlall, Darshanacharya

नोट - *यह आवश्यक नहीं कि इस अंक में संगृहीत लेखों का दायित्व सम्पादक पर हो। लेखक स्वयं उत्तरदायी है।*

Responsibility for the information and views expressed, set out in the articles, lies entirely with the authors.

मुख्य सम्पादक

प्रकाशक - आर्य सभा मॉरीशस
१, महर्षि दयानन्द गली, पोर्ट लुई
फोन - २१२२७३०, फाक्स - २१०३७७८
वार्षिक शुल्क - रू० २००/-

Printer : BAHADOOR PRINTING LTD.
Ave. St. Vincent de Paul, Les Pailles,
Tel : 208-1317, Fax : 212-9038

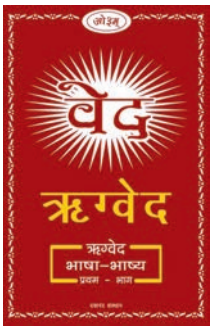

अघमर्षण मन्त्रः

ओ३म् ऋतं च सत्यं चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत।
ततो रात्र्यजायत ततः समुद्रो अर्णवः।। *ऋग्वेद १० - १९० - १*

शब्दार्थ :- **अभीद्धात्** - सर्वतः प्रकाशमान, **तपसः** - परमेश्वर के द्वारा दिये गए ताप से, **ऋतम्** - सृष्टि नियम, **च** - और, **सत्यम्** - कार्यरूप प्रकृति, **अधि अजायत** - प्रकट होते हैं, **ततः** - उसी से, **रात्र्यजायत** - रात्रि-प्रलय की रात्रि उत्पन्न होती है, **ततः** - उसी तप से, **अर्णवः** - जलयुक्त, **समुद्रः** - आकाशीय समुद्र, **अजायत** - उत्पन्न होता है।

भावार्थ :- *परमेश्वर के सर्वतोव्याप्त प्रकाशमान **तपः** - ताप से ऋत और कार्यरूप प्रकृति प्रकट होती है । और उसी से प्रलय की अन्धकारमयी रात्रि उत्पन्न होती है और उसीसे आकाशीय समुद्र उत्पन्न होता है।*

(महर्षि दयानन्द सरस्वती)

Aghamarshana Mantrah - Verse of Destruction of Sin

Om Ritancha Satyanchābhīddhāttapasō Adhyajāyata.
Tato rātryajāyata tataḥ samudrō arṇavaḥ. *Rigved 10 - 190 - 1*

Meaning of Words :- **Ritam** - natural law, **Cha** - and, **Satyam** - law of morality and society, **abhīddhāt** - the light of God which prevails everywhere, **tapasah** - by the knowledge of God, **adhyajāyatah** - produced, **tatah** - by the same God, **rātri** - the night of dissolution, **ajāyatah** - produced, **samudrah** - ocean, **arṇavaḥ** - water of the sky - celestial water.

Purport :-- O Supreme Creator, it is thanks to your omnipotence and divine knowledge that the laws of nature and Vedic truth were formulated. Day and night as well as the oceans and the vast expanses of water come into being through Your limitless power.

Explanation :-- *The above Vedic hymn clearly illustrates that God is the Creator of this universe. He is the Supreme and Omnipotent Lord. His Omnipotence is manifested in His creation. He is also the Dissolver. It is He Who brings the darkness of dissolution after creating and preserving our universe.*

Dr O.N. Gangoo

श्री अभयदेव रामरूप न रहे

श्री अभयदेव रामरूप आर्य सभा के कर्मठ पुरोहित, पंडित रामलगन रामरूप जी के तीसरे पोते थे । पंडित रामलगन जी पचासी वर्ष की आयु में दिवंगत हुए थे और उनके पुत्र श्री रामदेव रामरूप छयासी वर्ष की उम्र में चल बसे थे। इस वर्ष के ४ जून को साठ वर्ष चार दिन की आयु पार करने के पश्चात् श्री अभयदेव रामरूप जी इस धरा-धाम से विदा हो गए । एक कवि ने लिखा –

विचार लो कि मर्त्य हो, न मृत्यु से डरो कभी ।
मरो, परन्तु यों मरो कि याद जो करें सभी ।।
मरा नहीं वही कि जो जिया है और के लिए ।
यही पशु-प्रवृत्ति है कि आप आप ही चरे ।।

श्री अभयदेव रामरूप ने अपने जीवन के अन्तिम दशक में आर्यसमाज की बड़ी निस्वार्थ सेवा की। वे एक वर्ष के अन्दर सभा की लाखों रुपये की पुस्तकें बेच डालते थे। जब-जब कोई बड़ा उत्सव आता था, वे अपनी पत्नी, पद्मिनी जी को अपनी गाड़ी में साथ लेकर उत्सव-स्थल पर पहुँच जाते और धार्मिक पुस्तकें बेचने में तन-मन से जुट जाते। यह कार्य वे स्वेच्छा से और बिना कोई पारिश्रमिक लिए करते। उनकी सेवा बड़ी अनुकरणीय थी। संसार से जाते-जाते उन्होंने अपनी सात्विक सेवा की सुगन्ध बिखेर दी।

कौन रहा है, कौन रहेगा, यह दुनिया आनी-जानी ।
रहता नाम उसी का, जिसने की हो कुछ कुरबानी।।

आर्यसभा उनकी पत्नी श्रीमती पद्मिनी रामरूप और उनके आत्मीय जनों को अपनी सम्वेदना प्रकट करती है।

डॉ० उदयनारायण गंगू

सम्पादकीय

भारत सरकार की उदारता

बालचन्द तानाकूर, पी.एम.एस.एम, आर्य रत्न

मॉरीशस और भारत के मध्य वर्षों से एक गहरा सम्बन्ध है। सन् १८३४ ई० में भारतीय श्रमिकों के आगमन होने पर यह सम्बन्ध और अधिक बढ़ गया। हमारे पूर्वजों की जन्म-भूमि होने के कारण हमारे बाप-दादे का भारत से अटूट नाता जुड़ गया था, क्योंकि भारतीयों से उनका खून का रिश्ता था। इसी खून के रिश्ते के कारण, यहाँ भारतीय आप्रवासियों की हालत देखने के लिए मोहनदास करमचन्द गांधी जी ने मणिलाल डॉक्टर को भेजा था। डॉ० चिरंजीव भारद्वाज, स्वामी स्वतन्त्रानन्द जैसे महापुरुष और समय-समय पर कई धार्मिक एवं राष्ट्र नेता हमारे देश में आते रहे। सभी हमारे पूर्वजों को धैर्य और साहस देकर उन्हें मॉरीशस को उन्नत करते रहने की प्रेरणा देते रहे । उनकी प्रेरणाओं से भारतीय मूल के लोगों में जागृति उत्पन्न होने लगी।

सन् १९४७ ई० में भारतीय स्वतन्त्रता-प्राप्ति के बाद भारत सरकार की उदारता हमारे प्रति और अधिक बढ़ने लगी । इन दोनों देशों का सहयोग मज़बूत होने लगा। यहाँ भारतीय उच्चायोग का दफ़्तर खोला गया, धर्म-संस्कृति, ज्ञान-विज्ञान और आयात-निर्यात आदि क्षेत्रों में भारत सरकार की ओर से सहायता प्रदान की जाने लगी।

सन् १९६८ ई० में मॉरीशस को स्वतन्त्रता-प्राप्त होने पर इन दोनों सरकारों का अटूट सम्बन्ध स्थापित हो गया। देश के विकास में भारतीय सरकार विभिन्न क्षेत्रों में भारतीय उच्चायोग के माध्यम से मदद करने के लिए सदा तैयार रही, जिन कारणों से भारत की राजधानी दिल्ली में भी हमारी सरकार की ओर से मॉरीशस उच्चायोग का दफ़्तर खोला गया । इन उच्चायोगों के माध्यम से हमें अनेक क्षेत्रों में मदद मिलती रही।

भारतीय धर्म, संस्कृति, कला और भाषायी उत्थान में पूरा सहयोग मिलने लगा। अनेक सुयोग्य छात्रों को छात्रवृत्ति प्राप्त होती रही। शैक्षिक और वैज्ञानिक केन्द्रों की स्थापना की जाने लगी। व्यापारिक धन्धे विकसित होने लगे। आयात और निर्यात् में वृद्धि दिखाई देने लगी। राजनैतिक सम्बन्ध दृढ़ होने लगा। दोनों देशों के राष्ट्रीय नेताओं में अगाध प्रेम बढ़ता गया। इसी प्रेम-भावना और सहयोग से हमारे देश की उन्नति होती रही ।

आर्थिक मदद के रूप में भारतीय सरकार ने करोड़ों रुपये दान देकर महात्मा गांधी संस्थान, इन्दिरा गांधी सांस्कृतिक केन्द्र, राजीव गांधी केन्द्र, रवीन्द्रनाथ टैगोर संस्थान, पंडित जवाहरलाल नेहरू अस्पताल, साइबर सीटी आदि भव्य-भवनों का निर्माण कराया। विश्व हिन्दी सचिवालय स्थापित करके मॉरीशस का सम्मान बढ़ाया है । सामुद्रिक सुरक्षा निमित्त जहाज और हेलिकप्टर आदि दान रूप में देकर बन्दरगाह को सुरक्षित रखा, सैनिकों के प्रशिक्षण आदि में सहायता की। कई बार की सहायताओं से मॉरीशसीय जनता को भारी लाभ हो पाया। हम सभी नागरिक भारत सरकार के प्रति अति आभारी हैं।

आज जब हमारे प्रधान-मन्त्री, माननीय प्रवीण कुमार जगनाथ जी के निवेदन पर भारत की सरकार मॉरीशस और आगालेगा के विकास में करोड़ों रुपयों की सहायता करने के लिए तैयार है, तब क्यों विरोधी दल इस आर्थिक मदद पर कई सवाल उठा रहे हैं? इस भारी सम्पत्ति से क्या सभी देशवासियों को लाभ नहीं होगा? यह सोचनीय विषय है, क्योंकि विपक्ष दल के सवालों के पीछे जातीय भेद-भाव का प्रश्न नज़र आता है ।

इस गम्भीर परिस्थिति में हम सभी मॉरीशसवासियों को भारतीय सरकार की उदारता पर गर्व करना चाहिए। हम एकमत होकर अगर अपने प्रधान मन्त्री माननीय प्रवीण कुमार जगनाथ और उसकी सरकार का समर्थन करेंगे तो सरकार की परियोजनाएँ साकार होंगी और हमारा देश भारत सरकार के सहयोग से उन्नत होता जाएगा ।

हमारे लिए कितने हर्ष की बात है कि हमारी जीवन-शैली और भारतीयों की जीवन शैली में समानता देखकर भारतीय नेतागण मॉरीशस को एक 'छोटा भारत' मानते हैं। अब हमारे लिए और भी गर्व की बात है कि भारत के **प्रधानमन्त्री, माननीय नरेन्द्र मोदी जी** मॉरीशस को अपना 'छोटा भाई' मानकर भ्राता और अनुज का नाता स्थापित कर चुके हैं । हमारी यही कामना है कि यह सम्बन्ध ऐसा ही कायम रहे ।

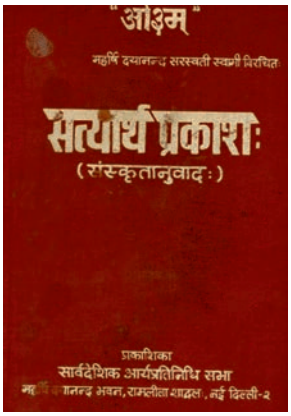

सत्यार्थप्रकाश मास के परिप्रेक्ष्य में

श्री सत्यदेव प्रीतम, सी.एस.के,आर्य रत्न, महामन्त्री आर्य सभा

एक सौ तैंतालीस वर्ष हो रहे हैं, जब से महर्षि स्वामी दयानन्द ने बैठकर सत्यार्थप्रकाश का श्रुतिलेख किया था। स्वामी जी बोलते जाते थे और पंडित चन्द्रशेखर लिखते जाते थे । इसे पूरा करने में केवल तीस मास या नब्बे दिन लगे थे। १८७५ में बनारस के स्टार प्रेस में छपकर प्रकाशित हुआ था, न कि लाइट प्रेस में जैसे कहीं-कहीं लिखा पाया जाता है । पर जब वह प्रति स्वामी जी के हाथ आयी तो उन्होंने पढ़कर देखा कि विभिन्न जगहों में अवैदिक विचार प्रकाशित हो गए थे। स्वामी जी ने अपने हाथों शुद्ध किया और वही प्रति आज तक चली आ रही है। उसे पुनः पढ़ने का सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ, क्योंकि १८८३ में स्वामी जी का निर्वाण हो गया था। उसी प्रति का अनुवाद सब से पहले डॉ० चिरंजीव भारद्वाज ने अँग्रेज़ी भाषा में किया था जो आज दुनिया भर में पढ़ा जाता है। मॉरीशस में लोग सबसे अधिक उसी अनुवाद को पढ़ते हैं । इसलिए कि डॉ० चिरंजीव भारद्वाज ने हमारे देश में परिवार सहित तीन साल तक रहकर सामाजिक सेवा की थी।

१८९८ में भोलानाथ तिवारी जी जो सत्यार्थप्रकाश स्वयं पढ़ रहे थे, उन्होंने उसे मॉरीशसवासी भिखारी को तब दिया था, जब उनकी सेवा अवधि पूरी हो जाने के बाद वे भारत वापस जा रहे थे । यदि भोलानाथ तिवारी ४-५ वर्ष पहले सिपाही के रूप में आये होंगे, तो अनुमान लगाया जा सकता है कि सत्यार्थप्रकाश का पठन मॉरीशस भूमि में १८८४-८५ में आरम्भ हो गया होता । मॉरीशस में जन्मे लोगों को उन्नीसवीं शताब्दी के पिछले वर्षों में पढ़ने का सौभाग्य प्राप्त हुआ होगा। पढ़ने के चार-पाँच वर्ष बाद आर्यसमाज स्थापित करने का विचार आया होगा।

भारत वर्ष में सत्यार्थप्रकाश का प्रणयन १८७४ में हुआ और आदि सत्यार्थप्रकाश छप भी गया। १८७५ में स्वामी जी ने आर्यसमाज की स्थापना बम्बई में की । हमारे मॉरीशस में भी सत्यार्थप्रकाश के आने के बाद ही आर्यसमाज स्थापित हुआ ।

दिवस-काल

पंडित राजमन रामसाहा, आर्य भूषण

धरती पर मनुष्य जीने के लिए परिश्रम करने आया है। उसे परिश्रम करने के लिए समय चाहिए और निश्चित काम भी चाहिए। वैसे रोटी कमाने में कभी भी, चाहे रात हो या दिन परिश्रम किया जा सकता है। पर दुनिया ने रात को सोने के लिए और दिन में काम करने के लिए आदि सृष्टि से निश्चित कर दिया है। चाहे प्रगतिशील संसार रात में भी विज्ञान के बल पर काम करने लगा है। पर अधिकतर लोग दिन ही में काम करते हैं ।

कामकर सम्मान से परिश्रम करना पसंद करता है । वह अपनी जान भी एक सिपाही की तरह गँवा देने को तैयार रहता है। वह अच्छी तरह से काम करता है, और पसीने बहाकर अपनी रोटी प्राप्त करता है । वह अच्छी तरह से जीता है। अच्छी तरह से जीने पर लोग उसको पसन्द करते हैं। सुधरे और सभ्य समाज के लोग संयम-नियमों से जीते हैं, सुचारु रूप से अपने कर्तव्य निभाकर कामकर सम्मान भी कमाते हैं ।

दिवसकाल को अच्छी तरह से सजाने में सभी को ईमानदार होना चाहिए । दुनिया के सभी कारोबार मालिक वर्ग के सुचरित्र से और कामकरों की ईमानदारी से सुचारु रूप से चलते हैं । इस तरह दिवस-काल में धन कमाने में सब लगे रहते हैं । सही ढंग से उचित समय पर काम निभाने से कामकर की योग्यता दीखती है, उत्पादन की क्षमता बढ़ने पर कामकर को सम्मान मिलता है ।

बहुत से कामकर काम के घाट पर तो उपस्थित हो जाते हैं, पर अपने से मनमानी करते हैं, समय चुराकर सो जाते हैं, एक बार कि वे काम में तो उपस्थित हैं। ऐसे लोग सिर्फ़ अपने दिवस ही नहीं वरन् अपने जीवन का स्वभाव बरबाद करते हैं। हर विभाग में दो-चार ऐसे कामकरों के हो जाने से कारोबार के ठप पड़ जाने का भय लगा रहता है । ऐसे कामकरों के कारण उस समय की सरकार की निन्दा होती रहती है और मालिक अच्छे कामकरों के लिए अत्याचारी हो जाते हैं ।

दिवस का काम ही खुशी देता है। लोग संतोष का जीवन बिताते हैं। कठोर काम भी खुशी-खुशी करते हैं। वे सदा नीरोग रहते हैं। कामकर को चाहिए कि वह अपने कंधे पर पड़े सिर का सही उपयोग करे। अवसरवादियों के दिमाग़ से जीने वाले का मस्तिष्क ठिकाने नहीं रहता है। वह दिमाग़-तनाव भी देता है और काम के रंज में जीने से अनेक प्रकार की बीमारियाँ देह को लग जाती हैं ।

अच्छे कामकर अपने दिवस को खुशी-खुशी बिताते हैं। कितने ही रंज में समय काटते हैं और कितने मुरझाए हुए सिर दर्द लेकर दिन बिताते हैं। दिवस बीतते जाते हैं। कामकर बूढ़े होते जाते हैं किसी दिवस को मर जाते हैं। सब प्रकार के काम करने के लिए दिवस-काल मिलता है । कितनों को जब दिवस-काल में जीवन नहीं मिलता है, तो रात में अपनी रोटी की खोज करते हैं । उन लोगों के लिए रात ही दिवस होती है। कारण वे दिवस में अपनी नींद पूरी करते हैं ।

वैसे दिन ही में सभी प्रकार के काम-व्यापार-धंधे, कारोबारादि चलते हैं, और करोड़ों लोग कार्यरत होते हैं। बड़ी ईमानदारी से और उचित परिश्रम से अपनी-अपनी ज़िम्मेदारियाँ निभानी चाहिए। कुछ अत्याचारी मालिकों के और कुछ देह-चोर कामकरों के कारण ईमानदारी सिर्फ़ कहने की बात हो जाती है, कारण कामकर जानते हैं कि दिवसकाल के वेतन से घर और जीवन चल पा रहा है, और मालिक भी जानते हैं कि मेरा धन्धा इन्हीं लोगों के परिश्रम से सफल है। इस युग में दिवस-काल में कामकरों की रक्षा के लिए श्रमिक संग खड़े रहते हैं ।

दिवस-काल के किए जाने वाले हर व्यक्ति के कामों से जीवन मरते दम तक चलता रहता है । दिवस-काल के कर्तव्यों का पालन करते रहने के लिए लोग लम्बी उम्र तक जीना पसन्द करते हैं । कारण हरेक का दैनिक भोजन दिवसकाल के आशीर्वाद पर ही निर्भर है ।

एक सौ चार वर्षों की माँ अपनी ओढ़नी धो रही थी। पूछने पर उसने उत्तर दिया। अपना छोलन धोते मुझे अपने मन को भी साफ़ रखने की बात याद आती है। अब भगवान के पास जाने का समय आ रहा है। कुछ दिवस के मेहमान बुढ़िया भी अपने दिवस काल को सुनहरा बनाने के लिए सफ़ाई चाहती है। दिवस-काल ही संसार है। दिवस-काल ही सुख-दुख है। दिवस-काल ही पाप और पुण्य है । दिवसकाल उन्नति और अवनति है । दिवस-काल ही स्वर्ग और नरक है। दिवस-काल ही जीवन और मरण है।

गृहस्थी का उत्तरदायित्व

पंडिता अंजनी महिपथ, वाचस्पति

गृहस्थाश्रम मानव-जीवन का सर्वश्रेष्ठ और सबसे महत्वपूर्ण पड़ाव है । ब्रह्मचर्य, वानप्रस्थ और संन्यास – ये तीन आश्रम गृहस्थाश्रम पर निर्भर रहते हैं । यही एक मात्र आश्रम है, जिसमें स्त्री-पुरुष एक साथ मिलकर अपने उत्तरदायित्वों को सम्भालते हुए अपने गृहस्थ-धर्म का पालन करते हैं, और एक साथ जीवन व्यतीत करते हैं । पति-पत्नी गृहस्थाश्रम रूपी गाड़ी के दो पहिये हैं। जब तक ये दोनों पहिये ठीक-ठाक होते हैं और दोनों साथ-साथ चलते हैं, तब तक गृहस्थ जीवन की गाड़ी सुचारु रूप से चलती है । कहने का तात्पर्य यह है कि पति-पत्नी का प्रेम और विश्वास अडिग हो और दोनों एक-दूसरे से प्रसन्न हों ।

'संतुष्टो भार्यया भर्त्ता भर्त्रा भार्या तथैव च' – अर्थात् जिस कुल में पत्नी से पति और पति से पत्नी सदा प्रसन्न रहते हैं, उस कुल में कल्याण निश्चित होता है । जहाँ दोनों का मन समान हो, मत एक हो और दोनों में गहरी मित्रता हो, वहाँ गृहस्थी की गाड़ी में कोई खराबी नहीं होती । यदि पति-पत्नी दोनों विरोधी स्वभाव के हों, दोनों में विरोधी मत हो तो गृहस्थी की गाड़ी थम-सी जाती है । यदि दुर्भाग्य से गाड़ी का एक पहिया खराब हो गया अथवा एक पहिया अलग हो गया तो गृहस्थी की गाड़ी, गाड़ी नहीं रहती, बल्कि ठेला बन जाती है, जिसे विधवा अथवा तलाकशुदा स्त्री को अकेले ही ठेलना पड़ता है । उस समय वह नारी अपने अन्दर छिपी शक्ति को पहचानती है, और तब वह अबला नहीं, सबला बन जाती है। विशेष रूप से जब उसके आँचल तले दो-तीन बच्चे बिलखते हों। उस एकाकी संतप्त नारी के समक्ष उसके बच्चों का उज्ज्वल भविष्य मँडराता है। गरीब-से-गरीब माँ अपने बच्चों को उन्नति के शिखर पर पहुँचाने का स्वप्न देखती है। वह त्याग, तपस्या और ममता की मूर्ति माँ अपना स्वप्न साकार करने के लिए खून-पसीना एक कर देती है । वह अपने अरमानों का गला घोंट देती है। अपने सुख की बलि चढ़ा देती है। ठेला ठेलते हुए उसके स्वेद और अश्रु बहकर एक हो जाते हैं। उस ममतामयी माँ के हृदय-सागर में कैसा भी भयानक तूफ़ान उठता है, फिर भी वह उस तूफ़ान के थपेड़ों को चट्टान की तरह अपने ऊपर झेल लेती है ।

कभी-कभी उसपर परिजनों के वाग्बाण की बौछार होती है। उसके मासूम बच्चों का तिरस्कार होता है, फिर भी वह सहनशीला नारी विष का घूँट पीकर रह जाती है। जो विधवा अथवा तलाकशुदा स्त्री नौकरी करती है, उसकी आर्थिक स्थिति सुधरी हुई होती है, इसलिए वह अपने बच्चों के पालन-पोषण करने और शिक्षा दिलाने का उत्तरदायित्व सम्भालने में समर्थ होती है, लेकिन उस विधवा की कैसी विकट परिस्थिति होती है, जिसके परिवार में कमानेवाला केवल उसका पति होता था और वह प्रत्येक वस्तु की प्राप्ति के लिए पति पर निर्भर रहती थी। यह विचार करने की बात है। उस असहाय विधवा को नये सिरे से नौकरी करके अपने बच्चों के भविष्य का निर्माण करना कितना कठिन हो जाता है !

यदि वह नारी अशक्त हो, अस्वस्थ हो तो वह अपने बच्चों को आगे बढ़ाने में असमर्थ होती है । ऐसी स्थिति में वह एक सहारा ढूँढ़ती है । जब उस अन्धी को लाठी मिल जाती है, तब या तो वह उस पुरुष के साथ पुनर्विवाह कर लेती है अथवा आत्मसमर्पण कर देती है । आत्मसमर्पण उसके माथे पर कलंक का टीका बन जाता है । वह कुलटा कहलाने लगती है। मैं एक विधवा को जानती हूँ। उसके शराबी पति ने अपनी जवान पत्नी को पाँच बच्चों के साथ छोड़ कर अपनी जीवन-लीला समाप्त कर दी । उसके बच्चे बिखर गये । एक दादी के और एक नानी के साथ जीवन व्यतीत करने लगे। वह विधवा ब्रेस काँसर की रोगिनी थी। नौकरानी का काम करती थी, परन्तु वह अपने बच्चों को शिक्षा दिलाने में असमर्थ थी।

एक अविवाहित पुरुष ने दयावश उसका हाथ थामा और उस विधवा ने विवश होकर आत्मसमर्पण कर दिया। परिणामस्वरूप सास ने उसे कुलटा समझकर घर से निकाल दिया। मैके में भी भाइयों ने आने से मना कर दिया । उस व्यक्ति ने उसे किराये के घर में ले जाकर रखा और उसका इलाज करवाया । उसके बच्चों को अपनाया । उस विधवा ने एक पुत्र को जन्म दिया । आज उसके बच्चे बड़े हो गये । उनका विवाह भी हो गया । आज भी वह विधवा उसी व्यक्ति के साथ अपना जीवन वसर कर रही है, लेकिन सभी विधवाओं और तलाकसुदा स्त्रियों का भाग्य एक जैसा नहीं होता ।

नारी करे तो क्या करे ? सच कहूँ कि कभी-कभी नारी के समक्ष ऐसी विकट परिस्थिति आ जाती है कि वह विवश हो जाती है । अन्त में मैं यही कहूँगी कि जिस विधवा या तलाकसुदा नारी ने ना ही पुनर्विवाह किया ना ही आत्म-समर्पण किया, उसने अपने पैरों पर खड़ी होकर अपने बच्चों के भविष्य का निर्माण किया, उन्हें उन्नति के शिखर पर पहुँचाया, वह नारी वास्तव में चैन की साँस ले पाती है और उस आश्रयदाता ईश्वर को कोटि-कोटि धन्यवाद करती है, जो वास्तव में आपना आश्रय प्रदान कर उस बेसहारा नारी का सहारा बन जाता है ।

संन्यासी की स्थिति

पंडित धर्मेन्द रिकाई, आर्य भूषण

संन्यास आश्रम में प्रवेश करते ही स्वामी जी की स्थिति में मौलिक परिवर्तन हो गया । गृहस्थ आश्रम के सभी बन्धनों से मुक्त होकर व्यक्ति संन्यासी बनता है; इस आश्रम में वह सर्वथा निःस्वार्थ एवं वीतराग होकर निष्काम दृष्टि से समूचे संसार का कल्याण करता है; परोपकार एवं परमार्थ की भावना से अपने सभी काम करता है। स्वामी जी यद्यपि संन्यास लेने से पहले वीतरागी यति का जीवन व्यतीत कर रहे थे, किन्तु वे आर्यसमाज और उनकी संस्थाओं – गुरुकुल, आर्य प्रतिनिधि सभा आदि में बंधे हुए थे। संन्यासी बनने के बाद उनका क्षेत्र विशाल हो गया। वे देश एवं संसार के उपकार की दृष्टि से काम करने लगे। अब वे अपने बनाये आर्यसमाज के नियम के अनुसार देश के सार्वजनिक कल्याण और जनहित की दृष्टि से राजनैतिक क्षेत्र में काम करने के लिए पूर्ण रूप से स्वतन्त्र थे।

स्वामी जी के संन्यासी बनने के बाद उनके मित्रों को इस बात पर बड़ा आश्चर्य होना स्वाभाविक था, कि वे राजनैतिक क्षेत्र में क्यों काम करने लगे हैं, जबकि पहले वे धार्मिक क्षेत्र में ही काम करते थे? इस प्रश्न का उत्तर देते हुए, उन्होंने अमृतसर काँग्रेस के स्वागताध्यक्ष-पद से दिये गये अपने भाषण में कहा था – 'इस राष्ट्रीय महासभा के इतिहास में शायद यह पहला अवसर है, जब संन्यासी इस शानदार वेदी पर खड़ा दिखाई देता है। जिस दिन से मैं स्वागत कारिणी सभा का सभापति चुना गया, उसी दिन से यह प्रश्न हो रहा है कि क्या संन्यासी को राजनैतिक आन्दोलन में भाग लेना चाहिए। मेरा उत्तर बहुत सीधा है। जिस दिन से मैंने पवित्र संन्यासाश्रम में प्रवेश किया, उसी दिन से सारे संसार को एक परिवार, सारे संसार के धन को एक आँख से देखने और लोक लज्जा को छोड़कर लोक सेवा में दत्तचित होने का व्रत धारण कर लिया । वैदिक धर्म की रक्षा के लिए जो सम्प्रदाय (सनातन धर्म समाज, आर्यसमाज और अन्य समाज) भारतवर्ष में स्थापित हैं, उनका प्रश्न है कि संन्यासी का राजनीति से क्या सम्बन्ध है ? मेरा उत्तर है – 'वेद मुझे आज्ञा देता है कि सौ बरस की उम्र तक जीने की आशा कर्म करते हुए करूँ। परन्तु शर्त यह है कि उन कर्मों में फँसूँ नहीं।'

सामाजिक गतिविधि

आर्यभवन में सत्यार्थप्रकाश मास का औपचारिक उद्घाटन

एस. प्रीतम

गत सोमवार ता० १२ जून को आर्यभवन पोर्ट लुई में सत्यार्थप्रकाश मास के उपलक्ष्य में एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया था। समय रखा गया था, दोपहर १२.४५ बजे से २.३० बजे तक।

कार्यक्रम इस प्रकार था – यज्ञ-प्रार्थना, भजन-कीर्तन, विद्वानों द्वारा संदेश, धन्यवाद समर्पण और शान्ति पाठ।

इस साल की विशेषता यह रही कि भारत वर्ष से आचार्य विजय भूषण आर्य और उनकी धर्मपत्नी डॉ० सुषमा आर्या ने अपनी उपस्थिति दी। आचार्य जी द्वारा दो सुन्दर गीत गाये गये और डॉ० सुषमा जी का एक सारगर्भित भाषण हुआ ।

पाठकों की जानकारी के लिए हम दोनों का संक्षिप्त जीवन विवरण पेश कर रहे हैं – आचार्य विजय भूषण आर्य ४० वर्षों से आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार में संलग्न हैं । आप संगीत के माध्यम से वैदिक-धर्म का प्रचार आधुनिक वाद्य-यंत्रों के माध्यम से करते हैं।

अभी तक आप नेपाल, बैंकोक, सिंगापुर मलेशिया, इंग्लैण्ड, आस्ट्रेलिया आदि देशों में प्रचार कार्य कर चुके हैं। उनके साथ उनकी धर्मपत्नी भी छाया के समान रहती हैं। आप कुलाची हंसराज माँ स्कूल अशोक बिहार दिल्ली में डी.ए.वी. मैनेजिंग कमिटी के अन्तर्गत चल रहे एक विशाल विद्यालय में पिछले ३९ वर्षों से कार्य कर रही हैं। पिछले १५ वर्षों से आप इस विद्यालय में हेडमिस्ट्रेस के रूप में कार्यभार संभाल रही हैं। इस विद्यालय में लगभग ७५०० विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं ।

कार्यक्रम के अन्तर्गत पुरोहित मण्डल के अध्यक्ष पं० यशवन्तलाल चूड़ामणि एवं सभा प्रधान डॉ० उदयनारायण गंगू का भाषण और Projector के माध्यम से कालजयी ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश पर प्रकाश डाला गया, दोनों विद्वानों ने अपने भाषण के दौरान अंग्रेज़ी और फ्रेंच भाषाओं में डी.ए.वी. कॉलेज के विद्यार्थियों को समझाने का प्रयास किया ।

कार्य का संचालन सभा मंत्री सत्यदेव प्रीतम ने किया। धन्यवाद समर्पण सभा उपप्रधान श्री हरिदेव रामधनी जी द्वारा हुआ।

पिता का मार्ग-दर्शन

विष्णुदेव बिसेसर

रामलाल गाँव के एक अच्छे हिन्दी अध्यापक थे। उनके दो बेटे थे – राम और महेश। पत्नी माला ने छोटे बेटे महेश को सर पर चढ़ा रखा था, क्योंकि वह पूजा-पाठ आदि में उनका साथ देता था । राम बैठका में हिन्दी पढ़ता था और यज्ञ-हवन में अपने पिताजी के साथ जाता था।

संक्रांति के अवसर पर बैठका में यज्ञ हुआ और राम ने एक भजन भी गाया । मगर महेश ने अपने मित्रों के घर जाकर बकरा काटा, खूब खाया-पिया और संक्रांति मनायी। तब से वह तामसिक खान-पान करने लगा ।

माता जी महेश को पूजा-पाठ में लगाना ही चाहती थीं। उन्होंने दूसरे त्योहारों के लिए उससे व्रत रखवाया, महीने तक जाकर हाथ भी बटवाया। पैसे भी लगाए । पर्व के अवसर पर मित्रों का साथ भी दिया और प्रसाद समझकर उसने तंबाकू भी जलाना आरम्भ कर दिया और आज भी उसकी लत छूट न पायी । चुपके-चुपके सिगरेट भी जलाने लग गया । लेकिन राम अपने मन्दिर गया। उसने यज्ञ में भाग लिया, अच्छी-अच्छी, नई-नई बातें भी सीखीं और घर आकर सीधा प्रसारण टी.वी. पर देखा ।

हिन्दुओं का एक खूब रंगीला पर्व आता है । लोग इसे बड़ी धूम-धाम से मनाते हैं। महेश उस दिन खूब आनन्द लेता है और गली-गली दोस्तों के साथ घर-घर भांग लेता है। कोका में, शर्बत में शराब का सेवन करता है, और खूब नाचता-गाता काले रूप में घर आता है । माता जी से कहता है – 'माँ आज खूब आनन्द आया । भांग

पिया और कोका में शराब भी ली । सब लोग ले रहे थे – नर, नारी, जवान, मैंने भी ले ली। माँ कहती है – पिताजी को मत जानने देना। जाकर स्नान कर लो और उसी दिन से बेटा शराबी बन जाता है। राम मन्दिर में खान-पान का आयोजन करता है, यज्ञ के बाद घर पर ही भोजन लाता है ।

कुछ महीने बाद दीपावली का महान् पर्व आता है। महेश के दोस्त कहते हैं – यह लक्ष्मी पूजा है, इसमें जुआ खेलने से बहुत धन आता है। रातभर खेलकर वह सुबह घर आता है, और उसी दिन से वह जुआड़ी भी बन जाता है। पर राम माता-पिता की सहायता करके सुबह मिठाई पकाता है। शाम को वह घर पर यज्ञ करता । यह है कुसंग से हानि और सत्संग से लाभ ।

नया साल आता है। राम घर की रंगाई-पुताई करता है, महेश – 'रेवेयों' साल के आगमन की पार्टी की तैयारी करता है । रात में खूब खाता-पीता है, मित्रों के साथ नाचता है, यहाँ तक कि बेहोश हो जाता है । सब उसे छोड़ कर भाग जाते हैं । पुलिस उसको अस्पताल में दाखिल करवा देती है।

राम इन्तज़ार करता है कि नये साल के अवसर पर वह यज्ञ करेगा। तभी फ़ोन आता है कि महेश अस्पताल में है। सब अस्पताल पहुँचते हैं। महेश को होश आता है, और सबसे हाथ जोड़कर माफ़ी माँगता है। वह कहता है - *'आज माँ के कारण मैं इस हालत में हूँ। पिता जी को सुनता तो मैं राम भैया की तरह आदर्श भाई और बेटा बनता।'*

तब राम कहता है – 'महेश ! हिन्दी हमारी माँ है, धर्म है, ज्ञान की, प्रगति की भाषा है। ईश्वर हमारे हृदय में विराजमान हैं। देव-दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश में यही सब लिखा है – परमात्मा एक है । नाम अनेक हैं । यज्ञ में सबको सब कुछ प्राप्त हो जाता है, आज से मेरी बात मानना। पिता जी के बताये हुए मार्ग पर चलना, चलो घर यज्ञ की तैयारी हो गई है, चलो इस साल यज्ञ द्वारा हम इस वर्ष का शुभारम्भ करते हैं।'

महेश चरण स्पर्श करके सबके गले लगता है। आज आप जैसे माता-पिता, राम जैसे भाई ने मुझे बचाया, अन्यथा मैं भूल-भुलैया में पड़ा रहता। धन्य है प्रभु ! वेद-माता धन्यवाद ।

मत करो जो मैं करता हूँ, वह करो जो कहता हूँ

।। सत्यवचन महाराज।। | ***जयपति पुनीत***

रण्जीत की पुत्री की शादी थी। घर के लोग तैयारियों में लगे हुए थे। जो जिस से बन पाता वे कर रहे थे। लोग अपने-अपने ढंग से सहयोग दे रहे थे। ७-८ वर्ष की एक बालिका सफ़ेद साड़ी पहने वेदी पर फूल सजा रही थी। उसे बचपन से ही सजावट करने का बड़ा शौक था। इतने में पंडित जी आ गये। घरवालों को बुलाकर पूछा कि ये सफ़ेद वस्त्र पहने लड़की कौन है? और यहाँ क्या कर रही है? दुलहन की माँ अंजली ने बताया कि वह उसकी बहन की बेटी सविता है।

फिर ये सफ़ेद वस्त्र में क्यों है, पंडित जी ने पूछा। अंजली ने बताया कि बचपन में ही इसकी शादी हो गयी थी पर कुछ ही दिनों बाद उस लड़के की मृत्यु हो गयी जिसके साथ इसकी शादी हुई थी। मतलब कि यह विधवा है, पंडित जी ने कहा। जी हाँ, पंडित जी पर इसने कभी लड़के से मिला भी नहीं ना ही इसकी गौना हुई थी।

पंडित जी ने कहा, पर विधवा तो विधवा ही है चाहे गौना हुई हो या नहीं। शादी तो हुई थी। अब यह शादी नहीं हो सकती। यदि हुई तो कुछ ही दिनों में नवविवाहित लड़की या लड़के की मृत्यु निश्चित है। मेरा जो कहना था मैं ने कह दिया। आगे आप लोग जानें। मेरा तो समय बरबाद हो गया। जो कुछ दान-दक्षिणा देना हो दे दो मुझे जाना होगा।

दूल्हे के पिता रामचरण ने कहा यदि ऐसी बात है तो यह शादी नहीं हो सकती। कौन अपने बेटे को मुसीबत में डालेगा। अब हम को चलना चाहिए। अब यहाँ रुकने का कोई मतलब नहीं।

दुलहन की माँ अंजली जी हाथ जोड़ कर सम्बन्धी जी के सामने खड़ी होकर विनती करने लगी। ऐसा मत करो भैया जी, मेरी बेटी का क्या होगा? लड़के को तो फिर भी कई लड़कियाँ मिल जायेंगी पर हमारी बेटी तो बदनाम होकर रह जायगी। कौन इसके साथ शादी करेगा। इसका तो कोई दोष नहीं है। यह एक विधवा को वेदी पर भेजने से पहले सोचना चाहिए था, सम्बन्धि ने कहा।

लड़की के पिता रनजीत और अंजली, दोनों पंडित जी के सामने हाथ जोड़े खड़े हो कर विनती कर रहे थे कि पंडित जी बतायें, कोई तो रास्ता होगा, इस पाप से बचने के लिए। पंडित जी बड़े भावुक शब्दों में बोले, रास्ता तो है, पर बहुत कठिन है। क्या कर पाओगे? आप बताये तो सही। तो सुनिये, पंडित जी कह रहे थे। शादी तो किसी भी हालत में रोकनी पड़ेगी। सब से पहले इस लड़की के बाल मूँड़वाने पड़ेंगे फिर दस दिनों तक फलाहार करके उपवास करना होगा। नित्य पूजा-पाठ करना होगा। दसवें दिन दस ब्राह्मणों द्वारा महायज्ञ करना होगा तब जा कर

पाप से मुक्त हो सकेंगे। तब यदि दूल्हे के परिवार राज़ी हो तो विवाह सम्पन्न हो सकता है।

रनजीत और अंजली, दोनों ने सम्बन्धी जी के सामने हाथ जोड़ कर पुनः विनती करते हुए कहा, सम्बन्धी जी अब तो आप को कोई आपत्ति नहीं होगी। कृपया हमारी लाज रख लीजिए। संबन्धि ने कहा जब पंडित जी ने रास्ता दिखा दिया तो अब क्या आपत्ति होगी। चलो हम तैयार हैं। दो सप्ताह बाद कोई तरीख निश्चय कर लेते हैं।

मेहमानों में बैठी विदुषी जी जो लड़की वालों का रिस्तेदार भी है। उसने कहा, पंडित जी आप कौन से ज़माने में जी रहे हैं। प्रकाश के इस ज़माने में ऐसी अनर्गल बात करते हुए आप को तनिक भी लाज नहीं आई। किसको बेवकूफ़ बना रहे हैं। मैं कब से बैठी आपकी बातें सुन रही थी।

पंडित जी बोले मैं तो शास्त्रों की बात कह रहा था। जो शास्त्रों में लिखा है वही तो कह रहा हूँ। आप नहीं मानती है तो न मानें, मैं क्या कर सकता हूँ। बताइए पंडित जी हम भी तो जानें कौन से शास्त्र में ये प्रायश्चित की बात लिखी गयी है। हम भी तो देखें कि आप सच कह रहे हैं या यूँ ही लोगों को अंधकार में रखने का प्रयत्न कर रहे हैं। जहाँ तक मैं जानती हूँ, ऐसा शास्त्र न कभी लिखा गया है न कभी लिखा जायगा। मैं सब शास्त्र लेकर थोड़े ही चलता हूँ, वे तो मेरे घर पर मिलेंगे, पंडित जी बोले। विदुषी ने कहा, कोई बात नहीं हम सब आप के घर चलते हैं। मेरे पास गाड़ी है। जितने लोग उसमें बैठ सकेंगे उन्हें लेकर हम चलेंगे। इस बार पण्डित जी की आवाज़ लड़खराने लगी। बोले अभी तो मेरे पास समय नहीं है फिर कभी देख लेना। समय तो आपके पास है। विदुषी ने कहा, आज तो आपको शादी करानी थी। शादी न सही आप प री दक्षिणा ले लेना पर प्रमाण ज़रूर दिखाना। पंडित जी बात को टालने की कोशिस कर रहे थे इतने में विदुषी ने कहा, हम समझ गये पडित जी, न तो आपके पास प्रमाण है न ही आपने इसके बारे में पढ़ा है। बस इतना बता दीजिए कि नन्दिनी तो आप ही की बेटी है न। इसमें क्या कोई शक है, हाँ वह मेरी ही बेटी है। विदुषी ने कहा, वह भी तो विधवा थी पर उसकी शादी कराने में तो आपको कोई आपत्ति नहीं थी। वह भी तो वेदी पर बैठी थी न? उसे कोई प्रयश्चित करना क्यों नहीं पड़ा? इसलिए कि वह आपकी बेटी थी। पंडितों के लिए सब कुछ सम्भव है और सारी (अनर्गल) बातें हम को ही सहनी पड़ती है।

आप लोग भी ज़रा आँखें खोलिये। कब तक इस तरह के बहकावे में आते रहेंगे। यदि यह लड़की विधवा हो गयी तो इसमें उसका क्या दोष है। दोष लड़कों को क्यों नहीं लगता। मैं तो कहती हूँ कि ऐसे पंडितो को बुलाना ही नहीं चाहिए।

अब भी समय है। यदि चाहो तो यह विवाह आज ही होगा। देवदत्त पंडित पास ही रहते हैं। चाहें तो मैं उन्हें अभी बुला लाती हूँ। पण्डित जी लज्जित हो कर हाथ जोड़े खड़े हो गये, बोले मुझे माफ करना बेटी। मैं सचमुच सुनी-सुनाई बातों में आ गया था। मेरे पास ऐसा कोई प्रमाण नहीं है जो दिखा सकता था। अगर मुझे यजमान माफ़ करे तो मैं यह शादी कराने को तैयार हूँ। विश्वास दिलाता हूँ कि आगे इस तरह की बात नहीं होगी। किसी को जाने-अनजाने अंधकार में नहीं रखूँगा।

सभी लोगों ने विदुषी जी को बधाई दी और धन्यवाद दिया। पंडित जी ने भी उसे आशीर्वाद देते हुए कहा कि बेटी आप और भी आगे बढ़कर लोगों में ज्ञान बाँटते रहिए। मैं सचमुच शर्मिंदा हूँ, मुझको माफ़ कीजिए-गा।

मातृ शक्ति की महिमा

श्रीमती भगवन्ती घूरा

मातृ शक्ति से अलंकृत जीवन को आभार।
मातृ भूमि है सारे प्राणियों का कर्णधार।
अन्न-जल प्रदान करके करती है जीवों पर उपकार ।
उपयुक्त स्थल और आवास से बसा है सुखी संसार ।
प्राकृतिक सौंदर्य और शुद्ध वातावरण से है सदा बहार ।
उदार भूमि के सेवन से होता है जीवन का संचार ।
विनती है हम सदा पाते रहें धरती माँ से उपचार ।
नित प्रतिदिन हम किया करें इस माँ को नमस्कार ।

वेद माता ज्ञान के भण्डार से होता है मानव का कल्याण।
ज्ञान से ही प्राणी होता है मानव प्रकाशमान ।
विवेक और विद्वान् गण से निश्चित है राष्ट्र का उत्थान।
शुद्ध ज्ञान और शुभ कर्म से बनता आत्मा महान् ।
महान् आत्मा ही से प्राप्त होता है मुक्ति का धाम ।
उत्कृष्ट बोधि जन की परम उपलब्धि है उत्तम ज्ञान ।
ज्ञान की देवी वेद-माता को शत-शत प्रणाम।

जन्म जननी माँ का योगदान है अपरम्पार ।
मातृत्व है नारी जीवन का एक अद्भूत दिव्य उपहार ।
'माता-निर्माता भवति' है माँ के प्रति एक उपमालंकार ।
माँ जीवन-निर्माण और संचार से बसाती है सुखी परिवार।
प्रथम गुरु बनकर कुशल सुयोग्य सन्तान बनाने को उठाती है भार ।
बल-बुद्धि-विवेक से भरपूर माँ होती है सुराष्ट्र का आधार।
माँ की ममता है प्यार का सागर और बाँटती है प्यार ।
प्यार ही से हम सदैव करें सभी माताओं का इज़हार ।
मातृ-दिवस के खास अवसर पर करें मातृ-शक्ति का गुणगान।
धन्यता से बनी रहे मातृत्व का आन-बान और शान ।

स्कूल का एक मेधावी छात्र - बाबा रामदेव जी

विनय सितिजोरी, प्रा० चिकित्सक

स्वामी रामदेव जी का जन्म २६ दिसम्बर १९६५ को हरियाणा के महेंद्र गढ़ ज़िले के सैयद-अलीपुर ग्राम में हुआ था। पिता का नाम रामनिवास यादव और माता का नाम गुलाबो देवी था। आपके बचपन का नाम रामकिशन था, जो बाद में जाकर स्वामी रामदेव हुआ ।

रामकिशन जी का बचपन विपन्नता में बीता । बचपन में झाड़ू करने से लेकर गाय का गोबर उठाने के अलावा आप खेत में काम भी किया करते थे। घर के २०-२५ किलो गोबर सिर पर उठाकर आधा मील दूर कूड़ी में डालना- हर सुबह का उनका काम था। इससे सिर में गढ्ढा हो गया था, जो शीर्षासन से ठीक हुआ। रामकिशन को पिता की आर्थिक परेशानी का एहसास था। उन्होंने शहजादपूर की सरकारी पाठशाला में पढ़ाई की । रामदेव बाबा बचपन में रबर के टायर की चप्पल और एक पाजामा दो-दो, तीन-तीन साल तक पहनते थे। लेकिन कक्षा में हमेशा प्रथम आते थे। वे बचपन से ही मेधावी थे।

आठवीं में पढ़ाई के दौरान रामकिशन का मैकाले शिक्षा पद्धति से मोहभंग हो गया, उन्होंने स्कूल ही नहीं छोड़ा, बल्कि वे गाँव से भाग निकले ।

स्वामी दयानन्द व सत्यार्थप्रकाश से प्रेरणा

बाबा रामदेव जी बताते हैं कि *'नौ साल की उम्र में मैंने महर्षि दयानन्द को पढ़ना शुरू किया था, और सत्यार्थप्रकाश पढ़ने से गहरी प्रेरणा मिली, तभी तय कर लिया कि अध्यात्म की ओर जाना है।'* १६-१७ साल की उम्र में मैंने घर छोड़ दिया था और गुरुकुल की ओर चला था। मैं हरिद्वार गुरुकुल में पढ़ना चाहता था, परन्तु गुरुकुल ने मुझे लेने से इन्कार कर दिया। फिर मैं आर्य गुरुकुल चला गया । वहाँ के अधिकारी ने पिता जी को चिट्ठी लिख दी । पिता जी लेने आ गए। वह बोला कि 'दोबारा घर से निकला तो हाथ-पैर तोड़ दूँगा, बहुत हो गई तेरी पढ़ाई! अब खेती कर' परन्तु रामकिशन को और कुछ बनना था।

रामकिशन बना स्वामी रामदेव

धुन का पक्का किशन कहाँ मानने वाला था ! दोबारा गुरुकुल चला गया। परिवार ने लाख समझाया पर टस से मस न हुआ । गुरुकुल में पाँच साल तक उन्होंने योगाचार्य बलदेव जी से योग और आचार्य प्रद्युम्न से संस्कृत व वेदों की शिक्षा ली । यहीं पर बालकृष्ण जी से मुलाक़ात हुई।

बाबा रामदेव जी बताते हैं – 'प्राणायाम योगियों, ऋषि-मुनियों का काम माना जाता था। मैंने सोचा योग करने वाला ऋषि हो जाएगा तो बुरा क्या है। रामदेव जी ने अक्टूबर १९९२ में सांसारिक कामों से संन्यास ले लिया और रामकिशन से स्वामी रामदेव बन गया।

बाबा रामदेव रोज़ाना सुबह तीन बजे बिस्तर छोड़ देते हैं। फ़्रेश होने के बाद वे भक्तों और अनुयायियों को दो से ढाई घण्टे प्राणायाम करवाते हैं। वे हरी सब्ज़ी, मौसमी फल और दूध लेते हैं। वैसे पूरे दिन समय-समय पर से बाबा हल्का आहार लेते रहते हैं। चाहे वह नाश्ता हो या लंच हो, या फिर डिनर, स्वामी जी पौष्टिक भोजन पसंद करते हैं। दिन में बीच-बीच में वे शर्बत या फल लेते रहते हैं ।

रामदेव जी शुद्ध शाकाहारी हैं। वे सादा खाद्य पदार्थ लेते हैं, तथा १८ से बीस घण्टे काम करते हैं - रोज़ाना।

तन पर भगवा - गेहुआँ वस्त्र, पैरों में खड़ाऊँ और चेहरे पर मुस्कान यही तो योगगुरु बाबा रामदेव की पहचान है। वे ऐसे योगी के रूप में पहचाने जाने लगे, जिसने वेद-पुराण, ग्रन्थों और हिमालय की कंदराओं में छिपे योग और योग-शक्ति को बाहर ही नहीं निकाला, बल्कि टेलिविज़न के ज़रिये घर-घर में लोगों तक पहुँचाया भी और स्वास्थ्य के लिए उसे रामबाण औषधि बना दिया और प्रसिद्धि पायी ।

स्वामी रामदेव जी स्वामी दयानन्द जी के मार्ग पर चल रहे हैं । वे योग करते हैं । योगी हैं। ब्रह्मचारी हैं। ऋषि-परंपरा को आगे बढ़ा रहे हैं । वैदिक धर्म का प्रचार-प्रसार कर रहे हैं । यज्ञ-हवन करते हुए शाकाहारी हैं । शिक्षा-स्वास्थ्य को आगे बढ़ाते हुए, वे गुरुकुल चला रहे हैं ।

When kindness pays

"Kindness gives birth to kindness".

Sookraj Bissessur, B.A. (Hons)

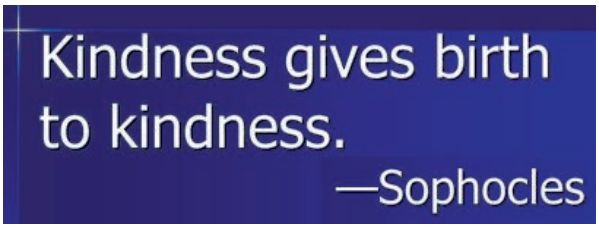

"One should regards one's self under restriction to follow altruistic ruling of society, while following rules of individual welfare all should be free."
10th principle of Arya Samaj

"There is no need being kind nowadays. Modern society is a huge pack of ingrates." This was what a sincere friend of mine told me quite recently, while we were enjoying and breathing the fresh cool air of a resplendent Sunday evening at the seaside. This very outpour sank deep in my being. Does it mean that the whole of humanity is just a bundle of ingrates? There is something we should know about human nature. Everyone does not behave the same way. No doubt, there are ingrates among mankind but man cannot be divorced from gratitude and appreciation.

However, he who is kind should not expect anything in return. It is our moral duty to be kind to people. We should not be dissuaded and discouraged if ingrates came in our way. Cherishing hopes to be compensated for acts of kindness amounts to selfishness and greed. One who continues steadfastly to discharge this moral duty surely feels the joy of being kind.

There was an African boy who went for higher studies in England in the early fifties. At that time Apartheid (racial discrimination), prevailed and he could not secure accommodation. A very kind and broad minded white landlord arranged for his accommodation. They became good friends. After his studies, he returned to his country and was able to help the white man with a business connection in an oil rich African country. The latter became a billionaire. Deeply engrossed in business, he did not show that kindness and felt no need to do good to his African friend.

Besides material gains, there are also several facets of kindness and how it pays. Example : A Chief Medical Officer in a state-owned British hospital was loved by all patients, nurses and many others for her kindness. She always treated her patients and subordinates as good friends and even helped them solve other problems. One day she fell sick, became unconscious and was immediately admitted to the hospital. Apart from the endless hours of medical attention by other doctors and nurses, hundreds of people prayed outside the hospital for her survival. That affection was due to her medical skills, but to a greater extent because of her kindness.

There is no need being wicked. Wickedness eventually torments one's soul whereas kindness refreshes it. Any act of kindness, no matter how small, never goes waste. Kindness pays, both in the short and long run.

Enjoy ……..

The Late Mr Ramsaran Moti

We record with the greatest regret the death of Mr Ramsaran Moti, the Head Teacher of Rivière des Anguilles Government School and one of the pioneers in Arya Samaj movement in Mauritius. For many years, he was President of Mauritius Arya Paropkarini Sabha where he was held in high esteem by his friends and countrymen. In his death we lose one of those noble souls who have always been interested in the progress and development of the Hindu Community. To our friend Mr Jankeeparsad Moti his son, and to the bereaved family, go our feelings of heartfelt condolence.

Arya Vir, 14th April 1944

Consigned by Pahlad Ramsurrun

YOUTH MAGAZINE

MAURITIUS ARYA YUVAK SANGH

SUCCESS

Dharamveer Gangoo, M.A., P.G.C.E – President Mauritius Arya Yuvak Sangh

Each and everybody wants to achieve success in life. It is their basic right. As any right, it also implies responsibilities. Success is achieved after lots of hard work, seriousness and good time management. Those who have been successful have all the time been striving extremely hard, thus burning the midnight oil.

According to the Vedic dharma, we should not rest on our laurel because it is strongly affirmed that – Rest makes waste!!

Stagnant water stinks. Likewise, inactive life full of lethargy and luxury ultimately leads to decay and decline. The Vedic concept of *"charaivaiti, charaivaiti"* is a wakeup call to move out of inactivity, stagnation, to strive and not to stop till the goals are reached. Moreover the scriptures further teach us that - *"Action is life while inaction is death…."*

So we have to indulge, at all times, in activities which will be fruitful to one and all. Go ahead. The Vedic way of life always inspires and motivates us to assert ourselves in the performance of our duties and activities, as well as turn away from negligence and irresponsibility, the foolproof key to achieve remarkable success.

'Arohanam-ākramanam jivito-jivito-ayanam' (Atharva Veda 5-30-7) states that all living beings should always try to ascend and march ahead, i.e. progress and prosper.

Is the path of progress for every man? The life of sacrifice and dedication of Swami Dayanand Saraswati was successful as he enlightened the life of millions of people through his hard work and exemplary life. History speaks of so many people who inspired many others as role models.

The Vedas state that men should necessarily leave laziness and awaken to seek true knowledge, power and beauty. Life is given to us to seek, not to sleep. If we do not seek, we will never be successful and instead we will surely fall deep into gutters. On the other hand, anyone who seeks new knowledge and competencies exalts himself, achieving progress and success in every sphere. Therefore, it is the prime duty of each and everyone who wants to come out with flying colours should by all means move ahead in quest of both academic and spiritual knowledge.

A life of diligence and perseverance, efforts and struggles leads us to realise our goals, hence be successful in all our works and activities. Similarly, through our efforts we shall all enjoy blissful glimpses of God. However, we should bear in mind that bliss or *ānand* is showered only on those who are alert, keep going, get to their feet to assume their duties and responsibilities, and shun lethargy and laziness.

NEVER FEAR TO BRING TO REASON

Sarwanand Nowlotha, B.A. - Secretary Mauritius Arya Yuvak Sangh

The first step towards bringing reform is to bring the mind to reason about what is good and bad. The basis of reform itself lies upon the solid foundation of reasoning. However, the effort to bring to reason requires a methodical proceeding and one needs to be dauntless (which is so rare).

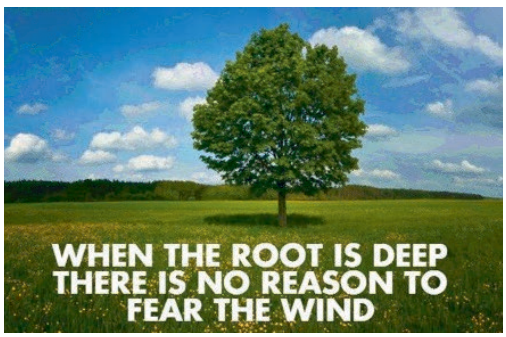

The first step towards bringing reform is to bring the mind to reason

The Youth Magazine

Volume 10, June 2017

EDITORIAL BOARD :

Mr Dharamveer Gangoo, *M.A.,P.G.C.E, Chief Editor*
Mr Sarwanand Nowlotha, *B.A, Associate Editor*
Prof. Soodursun Jugessur,*D.Sc, G.O.S.K, Arya Bhooshan*
Dr Oudaye Narain Gangoo, *M.A,Ph.D, O.S.K, Arya Ratna*
Mr Narainduth Ghoorah, *P.M.S.M, Arya Bhooshan*

PRODUCTION :

Mr Satterdeo Peerthum, *O.S.K,C.S.K, Arya Ratna*
Dr Jaychand Lallbeeharry, *M.A, M.Ed, Ph.D*
Mrs Poonum Sookun – Teeluckdharry, *Barrister at Law, LLM*
Mrs Yalini Devi Rughoo Yallappa, *B.A,P.G.C.E*

FINANCE :

Mrs Rutnabhooshita Puchooa, *M.A,P.G.C.E*
Mrs Aryawatee Boolauky, *MSc, P.G.C.E*
Mrs Sangeeta Samputh, *B.A*
Mr Ravindrasingh Gowd, *Agricultural Chemist*

WEBSITE :

Yogi Brahmadev Mokoonlall - *Darshanacharya*
Mr Leckrajsing Ramdhony, *BSc*
Mr Vivekanand Lochun, *M.Sc*

Published by :

The Mauritius Arya Yuvak Sangh c/o Arya Sabha Mauritius, Port Louis

Tel # : 212 2730, 208 7504
Fax # : 210 3778

e-mail : aryayouthmagazine@gmail.com
www.aryasabhamauritius.mu

about what is good and bad. The basis of reform itself lies upon the solid foundation of reasoning. However, the effort to bring to reason requires a methodical proceeding and one needs to be dauntless (which is so rare).

Let us start from the grass-root level, that it, the childhood stage. The brightest and well-behaved children are those who have been brought up under strictness and discipline. They have grown up in backgrounds where the saplings of reform and reasoning are deeply embedded. In contrast, the drop-outs are often those who have been over-pampered and spoilt. If a parent wants to see his ward successful, discipline should be there.

Quoting the 'Mahabhashya' (8.18), Swami Dayanand clearly stipulates that ''those fathers and mothers and teachers who are severe in educating their children and pupils, are as it were, giving them nectar to drink with their own hands, but those who fondly love them are giving them poison to drink, so to speak and thus spoil and ruin them. Thus parents should teach discipline to their children.''

In other words, through discipline, the child is being reformed and brought to reason. The individual has to understand since his tender age, the value of a disciplined life; he has to be reformed since his very early days, he has to reason since childhood itself.

If strictness and discipline with a view to bring reason is not imbibed since the very tender age, then, it will be very difficult or rather impossible to do so later in life. Any shortcoming or inclination towards an illicit way of life should be nipped from the bud. This will give to the child the best start in life. Great Reformers, like Swami Dayanand have had such childhood. It is evident to see that they have gone to change the world. They have marked an indelible imprint on people's minds at all ages.

Furthermore, the effort to reform and bring to reason applies also to the adult world. If adults are misbehaving or leading a wrongful way of life, then, it behoves to the youngsters to bring them to reason. For example, some whimsy or wicked mother in law who love to pester or harm her daughter in law, deserve to get reformed by the latter.

Hence, one should never fear to reform with a view to bring reason as it is after all a laudable mission.

Giving Vedic Culture to the Next Generation

The future of the Vedic community, and of the temple, is in the way the future generations get involved. *(Stephen Knapp, 2017)*

"What's in it for me?" and, "How is it going to help me, and which spiritual path is going to do the most for me? How can it make a difference to my growth and understanding?" This is a basic attitude of most people and is spreading wildly among the youth around the world.

I can also understand the position of other young people today, especially those of Indian roots, who may be asking the same questions regarding their own culture. Therefore, if they do not get the right answers to their questions, or the proper guidance to understand the purpose and meaning of its philosophy and practices, it will not make enough sense to them to seriously take up the path or fully accept it. Therefore, I realize how important it is to teach, guide them correctly, and in a way in which they will find interest in it.

Nowadays youngsters have adopted the American or western approach towards their parent's tradition. In other words, if they do not understand something, or if they cannot relate to it, or if it makes no sense or seems to have little relevancy to their lives, they will not take it. Gone are the days when sons and daughters accept something mainly because their parents or grandparents did. Now they have to be able to see the purpose of it; see how it can be useful to them and what difference it can bring to them. They need to understand the meaning and usefulness behind the tradition, and there is nothing wrong with that. In fact, that is the basis for being properly educated in the culture; you investigate, discover, accept and practise, abide by.

They need to see that Vedic culture is a dynamic and living tradition that holds eternal spiritual truths that are as relevant today as they were thousands of years ago. They need to see that many of the technological advancements that we take for granted today are made possible by many of the developments that had been given by the ancient Vedic tradition (Stephen Knapp, 2017)

The youth of today cannot be pushed or forced into something, but rather they need to be introduced to the Vedic tradition through methods that involve their own interests, whether it is technology and computers, or whether it is through ways of self-expression like music, dance, art, or even martial arts. All of these possibility have strong roots in the Vedic tradition and were used in ways of discipline that would also lead one to higher awareness and refined realizations (Stephen Knapp, 2017). We need to make the youth aware of the possibilities that can be attained or learned from the ancient Vedic tradition as it is applied to the modern age.

Source: Internet

Contributed by Mrs Luchanah Vanisha, English Educator @ DAV College, Port Louis

Our Education System

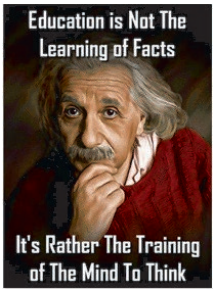

"Manu says 'You give away foods stuffs, water, cows, some extent of land, clothes to put on, mustard or gold, clarified butter, etc….by way of charity. But better than all charities, enumerated is what we give to others in the shape of Vedic knowledge. Therefore, do all that is possible by you to help the spread of education.'" (Light of truth, Ugeetha Prakashan Samstha, p29).

In our so called modern society "the educated" refers to those who have gone through the formal academic system where subjects such as chemistry, economics, political science, finance, biology, technology are taught. The modern concept of economics is that people should buy …buy … and buy, only to make way for increased production which ultimately would make society prosper. That has shifted our education system from the exploration to the exploitation mode.

If we discover petrol or any other resources, the first idea that pops in our mind is: how can we exploit it? And human capability tops the list of resources to be exploited! In the exploitation process man has been, is and will be depleting the world's resources. It is said that if the population of the whole world would lead the life of an average American we shall need another four planets to satisfy our needs, in utter ignorance that we do not have four planets …we have only one …or even half of it left. So it is high time that we re-invent ourselves. But does the education system allow us to do so?

Today education is viewed as a means of survival rather than a means of self emancipation. This is evident from the tremendous pressure children suffer from competition starting from nurseries, primary schools, high schools and beyond. It is the law of the jungle in the supposedly civilized society: 'the survival of the fittest!' Focus is more on the product than the process, emphasizing on rote learning rather than the overall development of the child.

Our present education system promotes consumerism, i.e. consuming for the sake of consumption, based on desires, not needs! It has no formula to stop over consumption. The end result is seen on news channels everyday: social evils, crime, poverty, pollution and global warming.

The Upanishads refer to the knowledge of science as '*avidyaa*' (darkness) which in the context of education meaning the lack of proper knowledge. True knowledge or '*vidyaa*' refers to '*adhyaatma jnaana*' (spiritual knowledge), that promotes peace within oneself and leads to self-emancipation. The knowledge of physics, mathematics, economics, etc. can bring satisfaction but not inner peace. Spiritual knowledge teaches us the judicious use of resources (*aparigraha*), contentment (*santosha*), and concepts that would halt over consumption …which enjoins the concepts of reduce, re use and recycle.

In the name of secularism, it is indeed a misfortune that people responsible for education at the strategic levels are either not equipped with spiritual knowledge or have to pretend being ignorant. The majority does not value the importance of spirituality (human values) and if ever taught, it is non-examinable! Worse, even teachers have had no formal or informal training on living values. Parents have, since long, pass the ball to teachers … and in turn are passing back the ball as they are not paid for that!

Mauritius is a highly capitalist society which find its roots in its education system. There is a craze for private or fee-paying schools which is more a matter of status; and government or aided-schools for those who cannot afford. And, even among the state schools the inequalities between the star schools and low or average performing schools is eye-catching; the former with children from the good middle class, the best teachers, better infrastructure, and the best results.

In the ancient times, Educational institutions were run by academicians with a spiritual bent of mind. Students and the teachers were living on the same campus. Children of both poor and rich were living in the same conditions with identical dresses, and same food and, more importantly all were treated alike. Focus was on personality development … *manurbhava*, to be human in thoughts, speech and actions!

If ever we want to reform our education system we need to adopt to concepts where inequality is tackled at the root-level. People will argue that since the society is multicultural why should we impose such a system? It is not religion that is being taught or forced fed to children, but rather *dharma* with its ten tenets (firmness, forgiveness, self-restraint, non-stealing, cleanliness, control of the senses, courage, learning truth and non-irritability), which none, whatever be his religious background would oppose …these are indeed universal values!

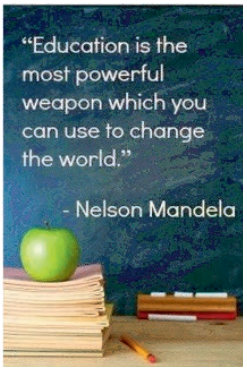

It seems difficult to establish such institutions and change the mindset of people …the question is: are we really modern? To what extent and in what sense? Modern relates to the present or recent times as opposed to the remote past for the better! ***But are we better human beings than people were during that ancient era?***

The common belief is that the Gurukul system is too outdated. Yet, we are still waiting, since centuries, for somebody to come up with new ideas where our education system would be more equitable and focused on the holistic development of our children.

Avinash (Yogesh) Hurdyal
Educator @ DAV College, Port Louis

What is your vision for the country and its future?

Yaadav Damree

My vision for our lovely island is simple: developing ourselves socially, politically, economically, physically and spiritually; to make Mauritius beautiful again!

Such philosophy should be adopted by youngsters as agents for a sustainable change in this country, be it politically, socially, economically and spiritually. To make a change is not doing politics as many may interpret it to be. Most importantly we need to share common love, belief and help each other in building a better Mauritius, and give that word 'democracy' more value. The mindset needs to be changed!

Our system of living, the economy of the country, education and health care do not depend only on politicians, but on all Mauritians. That does not mean you need to enter into politics for that good change, but all start by a matter of reflection over every single problem happening around the island. EVERY SINGLE PROBLEM IS YOUR CONCERN!

The ultimate solution? Adopting the Vedas to our daily lives is the only way to make sure that we are doing things right.

Nowadays we hear people talking about 'Vision 2030'. What is that vision …limited to development in economic sector, infrastructure, education or health? I would rather say that vision should be considered and set up by us youngsters. WHAT IS OUR VISION FOR THE FUTURE? HOW WOULD WE LIKE OUR COUNTRY TO BE BY 2030? Our country's future lies in the HANDS OF YOUNGSTERS!

I am only a change agent, trying to enjoin youth to help bring a good change, first in ourselves …in our society …in the country; to ensure that EVERY Mauritian is an educated person, to ensure that we actually have democracy, to help fight against any social crisis. All young people should start reflecting on those matters which is certainly important for OUR FUTURE. We need to question ourselves on everything happening around us… Why is this problem happening? What are the solutions? How these solutions can be executed? Who will bring solutions and actions? Are we concerned, although we might not be interested in politics?

But, all answers to those questions lies in the Vedas, and books written by the great Maharishi Dayanand. Learn what Maharishi Dayanand asked us to do: "Respect the principles of the Vedas as it should be."

Nowadays the authorities and government are facing a lot of criticism. The only reason is because no one is respecting the norms, rules and regulations of the society. Maharishi Dayanand taught us how to be good citizens and work for the betterment of one's country. So, let us use those guidelines and the knowledge to do good to the whole the world, first by working for the uplift of the self, the family, the village or town and our lovely island.

Let us come together to build a better Mauritius.

Let us Make Mauritius Beautiful Again!

Take things as they are

Satyadev Peerthum, C.S.K., Arya Ratna - Secretary Arya Sabha

Once, king Akbar and his Minister Birbal went for hunting. Birbal was known for his wisdom and sharp art. During hunting, unfortunately the king's finger was cut, the king was in great distress and pain. Instead of giving solace to the king, Birbal said, "O mighty King!" Everything happens for good. Hearing this, the king was enraged. He was in great agony, but the Minister was happy that his finger got cut! He ordered his soldiers to put the Minister in jail.

After this, it so happened that the king was caught by a Nomadic Tribe who took him for sacrifice to their deity. Just before the sacrifice the priest checked the king for completeness of the body and found that one finger was cut. Since, an incomplete body cannot be offered as sacrifice, the Nomads let the king free. Released from jaws of death, the king returned to the palace and hurriedly summoned the Minister. He expressed his regret over his unkind act of having jailed him.

Then the king asked Birbal, "It is true that my finger was cut for a good reason. But how did it serve you good for being imprisoned?" Birbal smiled and replied : "O mighty king, Had you not imprisoned me. I would have been sacrificed in your place!"

No matter how big the challenges are, there is always a greater purpose to all that happens.

...सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायतां...

... sabheyo yuvāsya yajamānasya viro jāyatam ...

May Youth be enthusiastic, considerate, patient and persevering!
May We all be truthful, faithful, industrious, skilled and hardworking! (Y.V 22.22)

Mauritius Arya Yuvak Sangh

in collaboration with

Arya Sabha Mauritius

invites you to attend to

The National Youth Day Celebrations 2017

Date & time:	Sunday 13 August 2017
	14.00 to 16.00hrs
Venue:	**Mahebourg Arya Samaj**
Theme:	Homage to the Indian Freedom Fighters

युवा शक्ति

अरिकता मनोहर

युवक है जैसे हमारे समाज की रीढ़ की हड्डी
उन्हीं के सहारे होती समाज में प्रगति
उनके बिना सफल नहीं हो पाता कोई भी कार्य
हरेक क्षेत्र में उनका सहयोग है अनिवार्य
नवजवान है, कल के हमारे मन्त्री और नेता
उन्हींके हाथों में है हमारे राष्ट्र की सत्ता
वे सैनिक बनकर अपने देश की करते रक्षा
विश्व में चारों ओर फैली है अशान्ति
नवजवानों को सही प्रयोग में लाना है उनकी शक्ति
सोचना है क्यों बुरे विचार वाले हैं आज-कल के व्यक्ति
केवल हिंसा का बोलबाला है पशु की भाँति
दूध-घी जो था, शक्ति की खान, शराब ने ले ली आज उनका स्थान
करते धूम्र और मदिरा-पान जिससे बढ़ रहा है चारित्रिक नुकसान
यह सारी लत छीन लेती शारीरिक और मानसिक बल
इनसे कोसों दूर रहकर अपने आप में पैदा है करना आत्म-बल
वरना असम्भव है कठिन कार्यों को बनाना सरल
तथा भविष्य में पड़ जाएगा भारी एक-एक पल
तो पैदा करना है कार्य-स्थल और हर कार्य को करना है सफल
उठो जवानो ! लगाओ अपनी पूरी शक्ति
तभी हो पाएगी व्यक्ति, समाज और जाति की उन्नति।

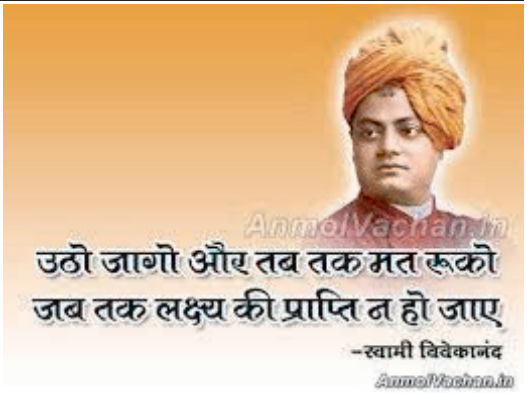

Satyārtha Prakāsh : Questions & Réponses

Que signifie Satyārtha Prakāsh?

La lumière sur le sens de la vérité. (Les mots : Satya + Artha + Prakāsh = La vérité + signification + lumière).

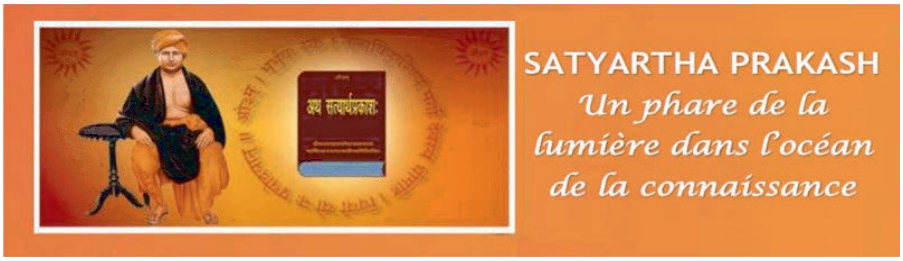

Qui a écrit ce livre ?

Maharishi Swami Dayanand Saraswati. Il fonda l'Arya Samaj.

Pourquoi ce livre est connu comme un chef d'œuvre ?

C'est un immense réservoir de connaissances de la culture Védique, le vrai sens de la religion, la spiritualité, le social, l'éducation, la politique, la vertu, les valeurs universelles et autres sujets qui favorisent le développement holistique de l'être humain.

Il constitue une charte pour une vie noble …noble en pensées, paroles et pratiques (actions) ou le code de conduite à transformer l'homme en être humain.

Pourquoi cette affirmation ?

L'auteur y met l'emphase sur le besoin de chacun de développer sa lucidité ou la finesse de l'intelligence qui le permet de distinguer le vrai du faux ; de s'extirper des ténèbres de l'ignorance et progresser vers la lumière des connaissances ; et d'assumer ses responsabilités et rejeter l'irresponsabilité et la négligence.

Ainsi nous deviendrons de meilleurs éléments au sein de la famille, la société, le pays et le monde.

Où mène la vérité ?

L'homme avancera évidemment sur la voie du bonheur car seule la vérité demeure la cause fondamentale de l'avancement physique, moral, spirituel et social de tous.

Sans la vertu (*Dharma*), le progrès sera de courte durée car tout s'écroulera comme un château de carte du moment que le monde ait vent de nos manigances immorales.

Une référence ?

Le Chhandogya Upanishad nous réfère au roi Ashvapati qui avait proclamé devant les sages qu'au sein de son royaume primait la culture Védique et il n'avait pas de voleur, de la misère, d'ivrogne, de pervers, de vicieux, de corrompu. Les gens vivaient la réalité spirituelle à tout moment.

Pourquoi le besoin de ce chef d'œuvre ?

L'homme avait chuté dans la fosse profonde de l'ignorance et de l'indolence. La multitude de croyances, souvent à couteaux tirés - l'un contre l'autre, avait sapé l'unité et les valeurs de la vie humaine.

A l'apogée de la souffrance …de la bonne bagarre autour des croyances en plusieurs dieux …des escroqueries et d'autres arnaques des prédicateurs de l'astrologie …de l'exploitation de l'homme par l'homme …du concept de la vie prochaine au paradis ou en l'enfer qui engendrait une vraie vie d'enfer de son vivant …du déni d'accès à l'éducation aux filles, à plusieurs d'autres selon les couches sociales …de la mauvaise interprétation du système de caste à la naissance au lieu de la méritocratie …et d'autres dérives de l'homme l'éloignant de la chose humaine, ce chef d'œuvre apporta un rayon de lumière à l'homme.

Et ce rayon de lumière on en a bien besoin dans notre monde du matérialisme à l'outrance où on vit selon le concept de …chacun pour soi et dieu pour tous !!!

Quoi de nouveau avec les enseignements de Satyārtha Prakash ?

L'application des enseignements dans notre vie au quotidien engendrera le regroupement de l'homme autour des valeurs universelles de la vie humaine prescrites dans les Védas que nul ne peut désavouer ; en somme vivre la réalité spirituelle et la vraie religion qui unira le monde. (Le mot religion est dérivé du latin '*religare*' et signifie unir !)

Le Satyārtha Prakash est le phare (*light house*) dans cet océan de connaissances qui permet à l'être humain de s'amarrer au bon port pendant la tourmente et les tempêtes.

Ces valeurs universelles nous montrent aussi la logique de la spiritualité et de la chose religieuse qui sont en harmonie avec les sciences. Elles aident à surmonter la petitesse d'esprit et consolider l'harmonie sociale. Elles poussent à éradiquer les maux de la société telle que les superstitions et autres croyances non-fondées, les pratiques occultes, etc.

C'est une boussole qui guide vers la vérité autour de la vie, la naissance et la mort, la spiritualité et la religion,

la nature, le yoga, et être à l'écoute de la voix du guide suprême au fond de soi.

En ce temps moderne où on a tous un agenda surchargé, comment saisir l'essentiel de ce chef d'œuvre ?

Il nous faut donner du temps au temps …à commencer par 10-15 minutes (au moins une fois par semaine) pour lire la préface (*bhumikā*). A d'autres temps durant cette semaine, relisez quelques lignes et contemplez sur les points qui vous intéressent. Répétez la même méthodologie avec la conclusion (*svamantavya-amantavya-prakāsh*). Ce procédé vous encouragera à plonger dans l'étude des préceptes et de les adopter …à devenir une personne noble en caractère, actions et nature (*guna, karma & svabhāva*), et avec une harmonie parfaite entre les pensées, paroles et pratiques (*manasā, vāchā & karmanā*).

…Bonne lecture.

Yogi Bramdeo Mokoonlall

गायत्री महायज्ञ

पंडिता चन्द्रिका राजू, वाचस्पति

मई मास के दौरान मॉरीशस के कई ज़िलों में आर्यसभा के तत्वावधान में अनेक शाखा समाजों ने गायत्री महायज्ञ का आयोजन किया ।

आर्यसभा का आदेश है कि वर्ष भर आर्य मंदिरों में धार्मिक कार्य होते रहें। जहाँ जून सत्यार्थप्रकाश मास से जाना जाता है, वहीं जुलाई-अगस्त वेद-मास घोषित किये गए हैं ।

इस वर्ष मई का महीना गायत्री-यज्ञ का मास बन गया । सदस्य-सदस्याओं ने बड़ी श्रद्धापूर्वक गायत्री यज्ञ का अनुष्ठान किया । मुझे कई घरों में गायत्री-यज्ञ सम्पन्न करना पड़ा ।

आर्यसमाज सें ज़ुलियें दोत्माँ में गायत्री यज्ञ

मोका आर्य ज़िला परिषद् के सहयोग से, सें जुलियें दोत्माँ आर्यसमाज में रविवार १४ मई २०१७ को गायत्री-यज्ञ का भव्य आयोजन किया गया । श्रीमती अनीता बलसारा के गृह पर मेरे द्वारा यज्ञ हुआ । श्रीमती अनिता बलसारा जी ने अपनी माता, श्रीमती धनमतिया सुकर जी अपनी बहन सुनिता सीऊगोबिन जी और बच्चों के साथ यज्ञ में भाग लिया ।

इस गायत्री-यज्ञ में मुख्य अतिथि के रूप में मोका ज़िले के मान्य प्रधान, श्रीमान् नरेन्द्र घूरा जी अपनी पत्नी भगवन्ती घूरा जी के साथ पधारे थे। काँ तोरेल आर्यसमाज से श्रीमान और श्रीमती आनन्द सुकर जी अपने परिवार के साथ आए थे। काँ तोरोल आर्यसमाज से ही, श्रीमती शीला सीबरन जी, श्रीमती ज्योति जोय जी, श्रीमती शोशीला बुलक जी आई थीं। सें जुलियें दोत्माँ आर्यसमाज से श्रीमती प्रभा दुखी जी उपस्थित थीं। इस यज्ञ में अनेक विद्वान्-विदुषी गण आए थे।

श्रीमती अनिता बलसारा जी का घर-आँगन और सुन्दर बगीचा मन-मोहक फूलों से चारों ओर सुगन्ध फैला रहा था । यज्ञमय वातावरण से प्रभावित होकर, भक्तगण शांति से बैठकर यज्ञ में भाग ले रहे थे ।

यज्ञ का शुभारम्भ गायत्री-गान से हुआ । गायत्री-गान से वातावरण में चार-चाँद लग गया । यजमान अत्यन्त प्रेम और श्रद्धा से यज्ञ में भाग ले रहे थे। शतवर्षीया माता धनमतिया सुकर जी, गायत्री मन्त्र का जाप करते हुए, बड़े प्रेम और लगन से अग्निदेव को अपनी आहुतियाँ अर्पण कर रही थीं। गायत्री जाप के सामूहिक उच्चारण एवं मनमोहक गूँज से वातावरण आनन्दमय बन गया । साथ ही यज्ञ के सुगन्धित द्रव्यों से वातावरण शुद्ध, पवित्र और स्वास्थ्य वर्धक हो गया था।

यज्ञ की समाप्ति के बाद यज्ञ-प्रार्थना हुई । उसके बाद सें जुलियें दोत्माँ आर्यसमाज के प्रधान श्री राकेश जी द्वारा स्वागत भाषण हुआ । उन्होंने कृतज्ञता प्रकट करते हुए, सभी मेहमानों का का स्वागत अत्यन्त प्रेम और सम्मान से किया । उसके बाद मैंने एक लघु संदेश दिया ।

तत्पश्चात्, मोका ज़िले के मान्य प्रधान, श्रीमान् नरेन्द्र घूरा जी ने द्वारा गायत्री-यज्ञ पर एक सारगर्भित प्रवचन दिया । उन्होंने गायत्री मन्त्र का अर्थ समझाते हुए, उसका महत्व बताया और कहा कि गायत्री चारों वेदों का सार है। यह गुरुमन्त्र है । उन्होंने बताया कि जो मनुष्य प्रातःकाल गायत्री मन्त्र का जाप करता है, उसपर सुख की वर्षा होती है। उसके शारीरिक, आत्मिक और बौद्धिक बल का विकास होता है ।

उन्होंने खुशहालचन्द जी के जीवन की एक घटना सुनायी कि खुशहालचन्द जी बचपन में पढ़ाई में बहुत कमज़ोर थे। कक्षा में पाठ न सुना पाने के कारण, बेंच पर खड़ा होना पड़ता था। एक दिन एक आर्य संन्यासी, स्वामी नित्यानन्द जी उनके घर पधारे । बालक खुशहाल की उदासीनता के कारण जानने पर, उन्होंने उसे गायत्री मन्त्र का मन लगाकर जाप करने को कहा । गायत्री मन्त्र का अर्थ समझाया और कहा कि इस मन्त्र के जाप से उसका कष्ट दूर हो जाएगा । परिणामस्वरूप, बालक, खुशहाल की बुद्धि निखरने लगी । वे अपना पाठ अति उत्तम प्रकार से करने लगे । घर पर प्रशंसा के पत्र आने लगे । बाद में बालक खुशहाल महात्मा आनन्द स्वामी बने । वे जीवन पर्यन्त गायत्री मन्त्र का जाप करते थे और जीवन में उच्च शिखर पर पहुँच गए । उनका ज्ञान, मनोबल और तपोबल गायत्री मन्त्र का प्रसाद था।

नरेन्द्र घूरा जी के शिक्षाप्रद प्रवचन के बाद, काँतोरेल आर्यसमाज से आए श्रीमान् आनन्द सुकर जी द्वारा एक सुन्दर भजन प्रस्तुत किया गया । कार्यक्रम के अन्त में श्रीमती सुनीता सीऊगोबिन जी द्वारा धन्यवाद समर्पण हुआ। शान्ति-पाठ के बाद सत्संग समाप्त हुआ ।

अभेदानन्द आश्रम आर्यसमाज कार्चिये मिलेतर में गायत्री यज्ञ

गुरुवार १८ मई २०१७ को अभेदानन्द आश्रम आर्यसमाज एवं आर्यमहिला समाज कार्चिये मिलितेर में गायत्री यज्ञ के पश्चात् डॉ० चिरंजीव भारद्वाज जी पर प्रवचन हुआ।

यज्ञ का शुभारम्भ ४.०० बजे मेरे द्वारा हुआ । मौसम अनुकूल था। यज्ञ की शोभा बढ़ाने के लिए बहुत से विद्वान्-विदुषी पधारे थे। आर्यसभा मोरिशस के महामन्त्री, श्री सत्यदेव प्रीतम जी उस कार्य के मुख्य वक्ता थे।

यज्ञ के उत्तम और सुगन्धित द्रव्यों से वातावरण पवित्र और मनमोहक हो गया । सारे भक्तगण अति प्रेम और श्रद्धा से गायत्री मन्त्र का जाप करते हुए, यज्ञ की महिमा को आगे बढ़ा रहे थे। गायत्री मन्त्र के सामुहिक उच्चारण से कानों में अमृत घुल रह था। मन्दिर के चारों ओर यजमान मन्त्रमुग्ध होकर आनन्दपूर्वक अग्निदेव को आहुतियाँ अर्पण कर रहे थे।

यज्ञ-प्रार्थना के बाद स्वागत-भाषण के लिए मोका ज़िले के मान्य प्रधान श्रीमान् घूरा जी माइक पर आए । स्वागत के बाद, आर्य सभा के महामन्त्री श्री सत्यदेव प्रीतम जी ने, डॉ० चिरंजीव भारद्वाज पर अपना सन्देश सुनाया। उन्होंने बताया कि डॉ० चिरंजीव भारद्वाज जी शहर में काम करते-करते अपने मरीज़ों को उपदेश देते थे । डॉ० चिरंजीव भारद्वाज के उत्तम कार्यों से मोरिशस के शाखा समाजों का उत्थान होने लगा । सन् १९१५ में वे भारत लौट गए । मरीजों की सेवा करते-करते, हैजे की बीमारी से ८ मई १९१५ को भारत के लाहौर शहर में चल बसे ।

अन्त में आर्य सभा मोरिशस के महामन्त्री श्री सत्यदेव प्रीतम ने कहा कि ऐसे महान् आत्मा के प्रति हम नतमस्तक हैं । शान्तिपाठ के बाद सभा विसर्जित हुई ।

आर्यसमाज लाग्रेमाँ में गायत्री-यज्ञ

शुक्रवार २६ मई २०१७ को लाग्रेमाँ आर्य महिला समाज ने गायत्री यज्ञ का आयोजन किया । मेरे द्वारा ३.३० बजे यज्ञ का शुभारम्भ हुआ । सभी यजमान समय पर पहुँच गए थे। गायत्री गान से यज्ञ शुरू हुआ । अत्यन्त आनन्दमय वातावरण था। गायत्री मन्त्र के जाप से श्रद्धा का समाँ बन्ध गया । यज्ञाग्नि सोने की तरहत चमकती हुई, हवन कुण्ड के चारों तरफ़-बैठी हुई महिला यजमानों को प्रकाशित करती हुई गर्व से ऊपर उठ रही थी। सभी भक्तगण श्रद्धा से गायत्री का जाप करते हुए पवित्र अग्नि में अपनी आहुतियाँ समर्पित कर रही थीं।

यज्ञ की समाप्ति के बाद आर्य महिला समाज की प्रधाना, श्रीमती रम्भावती चतुरी जी ने सभी का हार्दिक स्वागत किया । स्वागत के बाद अपना सन्देश सुनाया और बताया कि जो साधक प्रतिदिन सुबह और शाम गायत्री मन्त्र का जाप करता है, परमात्मा उसके कष्ट-क्लेश को दूर कर देता है । गायत्री मन्त्र का जाप करने से बुद्धि की वृद्धि होती है । अन्त में आरती गान के बाद सबने मिलकर शान्ति-पाठ किया। प्रधाना प्रसाद तैयार कर के लाई थीं, सभी लोगों को प्रसाद और फल से स्वागत किया ।

वैदिक धर्म किसका है ?

डॉ० विनय सितिजोरी

यह धर्म सार्वभौमिक है क्योंकि यह किसी एक व्यक्ति विशेष, वर्ग, देश व जाति का नहीं है ।

सर्वहितकारी

यह धर्म सर्वहितकारी है, अर्थात् सबको समान रूप से शारीरिक, मानसिक, आत्मिक, सामाजिक उन्नति करने में सहायक होकर उन्हें इस लोक और परलोक में सुख, शान्ति, आनन्द व परमानन्द की प्राप्ति कराता है ।

वैदिक धर्म का आधार –

वैदिक धर्म चार वेदों पर आधारित है ।

वैदिक धर्म की विशेष पूजा-पद्धति की विशेष मान्यता –

यह धर्म संध्या, उपासना, हवन, यज्ञ आदि कर्मों को मान्यता देता है, जो मानव या मानव-समाज का इस लोक और परलोक का कल्याण करने वाला है ।

वैदिक धर्म में कर्मों की पहचान व लक्षण –

वैदिक धर्म में कर्मों की पहचान या लक्षण बतलाते हुए यह कहा गया है कि जिन कर्मों में धैर्य, क्षमा की भावना, दमन अर्थात् आंतरिक काम, क्रोध, लोभ, मोह, अभिमान-शुद्धि, इन्द्रिय निग्रह-इन्द्रियों की वासनाओं पर नियंत्रण करना । धीः - विवेकी बनना, विद्या - ईश्वर, जीव, प्रकृति संबंधी ज्ञान या आध्यात्मिकता, सत्य- सत्याचरण, अक्रोध- क्रोध न करना, आदि लक्षण पाये जाते हैं ।

वैदिक धर्म में भगवान् से प्रार्थनाएँ भी सार्वभौतिक की जाती हैं –

जैसे – **सर्वे भवन्तु सुखि नः सर्वे सन्तु निरामयाः**
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चित् दुख भाग्भवेत् ।

अर्थात् – हे प्रभो ! संसार में सभी प्राणी सुखी हों, संसार का कोई प्राणी दुखी न हो, मैं सभी को सुखी देखना चाहता हूँ । हमारा दुखों से सम्बन्ध न हो ।

वैदिक धर्म की महानता

वैदिक धर्म की महानता यह है कि वह केवल मनुष्यों का कल्याण नहीं चाहता । अपितु प्राणिमात्र का कल्याण चाहता है, क्योंकि यह सभी चेतन प्राणियों में आत्मा का होना स्वीकार करता है । संसार का अन्य कोई धर्म मनुष्यों से इतर प्राणियों में जीवात्मा स्वीकार नहीं करता, संसार में ऐसा भी तथाकथित धर्म है जो स्त्रियों में भी जीवात्मा स्वीकार नहीं करता । पशु-पक्षी सभी का कल्याण करना वैदिक धर्म की महानता है ।

वैदिक धर्म में वैचारिक उदारता

वैदिक धर्म ने सदा ही दूसरे मत-मतान्तरों के प्रति अथवा वैचारिक या धार्मिक मतभेद के प्रति सदैव उदारता, सहनशीलता का प्रमाण दिया है । धर्म प्रचार में इस धर्म ने कभी तलवार का सहारा नहीं लिया । अपितु ज्ञान, तर्क व शास्त्रार्थ के बल पर लोगों के दिलों और दिमाग़ों को भी प्रभावित किया है । यह धर्म सबको यही उपदेश देता है कि समस्त प्राणियों को मित्रवत् देखो और उनसे मित्र जैसा व्यवहार करो ।

वैदिक धर्म पक्षपातरहित धर्म

वैदिक धर्म पक्षपातरहित होकर सत्य को ग्रहण करने और असत्य का त्याग करने का उपदेश करता है, एवं विचार-स्वातन्त्र्य का आदर करता है । अर्थात् मानवीय गुणों के समर्थन का पक्षपाती है । यदि इस उपदेशानुसार संसार के सभी लोग पक्षपात रहित होकर, बुद्धिवादिता के आधार पर सत्य को ग्रहण करने और असत्य को त्यागने में तत्पर हो जाएँ तो सभी मानव सत्य धर्म अपनाकर इस विश्व को एक परिवार का रूप दे सकते हैं ।

वैदिक धर्म में श्रेष्ठ प्रार्थना का मन्त्र गायत्री –

वैदिक धर्म में गायत्री को सर्वश्रेष्ठ मन्त्र सिद्ध किया गया है, जो इस प्रकार है –

ओ३म् भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि । धियो यो नः प्रचोदयात् ।।

पेची वेरज़े सेंपियेर में नारी-सम्मेलन

प्रेमदा लीलकन्त, वाचस्पति

आज की महिला बहुत आगे निकल चुकी है। वह शैक्षिक, सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक आदि क्षेत्रों में पुरुष के साथ कदम-से-कदम मिलाकर चल रही है तथा उन्नति की राह पर बढ़ती चली जा रही है। स्वयं की रक्षा के लिए अपने पैरों पर खड़ी हो सकती है ।

इस वर्ष आर्य महिला मण्डल ने दो नारी सम्मेलनों का आयोजन किया – एक पेची वेरजे सेंपियेर में और जून मास के तीसरे सप्ताह में निरधिन भवन ओकुले में। सोलह अप्रैल को पंडिता अनजनी महीपत जी ने अपने आस-परोस की सदस्याओं और अन्य समाज सेविकाओं के सहयोग से पेची वेरज़े में महिला सम्मेलन का आयोजन किया।

इस सम्मेलन में शिक्षा मन्त्री श्रीमती लीला देवी दुखन जी, आर्य सभा मॉरीशस के प्रधान डॉक्टर उदय नारायण गंगू जी, उपप्रधान श्री बालचन्द तानाकूर जी, महिला मण्डल की प्रधाना श्रीमती धनवन्ती रामचरण जी, मोका आर्य ज़िला परिषद् के प्रधान श्री नरेन्द्र घूरा जी और अन्य महानुभाव उपस्थित थे। पंडिता लीलामनी कारीमन जी, पंडिता इन्दिरा माटर जी, पंडिता ललिता कुन्जा जी, पंडिता राजू जी, पंडिता सविता तोकूरी जी और पंडिता लीलकन्त जी ने कार्य की शोभा बढ़ाई।

सभागार भरा हुआ था और कार्य का प्रारम्भ यज्ञ से हुआ। पंडिता महिपत जी ने तहे दिल से सभी का स्वागत किया और उपस्थिति देने के लिए धन्यवाद किया।

पंडिता इन्दिरा, पंडिता ललिता और पंडिता राजू जी ने सुन्दर भजन प्रस्तुत किये, जो नारी और स्वामी दयानन्द पर आधारित थे। उस दिन अन्य समाजों में आर्य सभा के तत्वावधान में अनेक कार्यक्रमों का आयोजन हुआ था। आर्यसभा के प्रधान जी को चहुँ ओर पहुँचना था। व्यस्त होने के कारण उनका पहला सन्देश रहा ।

डॉक्टर उदय नारायण गंगू जी का सन्देश बड़ा ही शिक्षाप्रद रहा। उन्होंने अपने सन्देश में नारी के महत्व पर बल देते हुए, बताया कि यजुर्वेद में नारी को 'पुरन्धिः', शब्द से सम्बोधित किया गया है। उन्होंने 'पुरन्धिः' शब्द का अर्थ समझाते हुए बताया कि जो बहुत व्यवहारों को धारण करती है, वह 'पुरन्धिः' कहलाती है। हर एक क्षेत्र में नारी को 'पुरन्धिः' होना चाहिए। सभागार में बैठी शिक्षा मन्त्री श्रीमती लीला देवी दुखन जी का उदाहरण देते हुए, कहा कि यदि वे पुरन्धिः न होतीं तो देश की ज़िम्मेदारी नहीं ले पातीं । शिक्षा मन्त्री होने के कारण देश के छात्र-छात्राओं की ज़िम्मेदारी उन पर है। क्या पुरन्धि बने बिना यह कार्य करना सम्भव है ?

फिर उन्होंने समझाया कि नारी को हर क्षेत्र में पुरन्धि होना चाहिए। चाहे वह समाज हो, गृह हो या नौकरी का स्थान हो । आजकल लोग जीवन में व्यस्त रहते हैं, नौकरी से या फिर अन्य काम-काज के कारण तनाव में जीते हैं और समाज की ओर बढ़ना नहीं चाहते। यदि समाज चलाने वाली पुरन्धिः न हो तो समाज गिर भी सकता है। गृह को स्वर्ग बनाने वाली नारी ही तो है। नारी चाहे तो अपने गृह को स्वर्ग और चाहे तो नर्क भी बना सकती है। गृह को सम्भालने वाली नारी को पुरन्धिः होना चाहिए। नौकरी में भी नारी को पुरन्धिः बनना है, क्योंकि नौकरी करना बड़ी ज़िम्मेदारी है। यदि नारी पुरन्धिः न हो तो काम से हाथ धोना पड़ जाता है। उन्होंने यह भी समझाया कि नारी को विदुषी होने के साथ-साथ गृह के काम-काज में भी हाथ बटाना चाहिए, ताकि अपने परिवार को ठीक से सम्भाल सके ।

शिक्षा मन्त्री श्रीमती लीला देवी दुखन जी का सन्देश भी सराहनीय रहा। अपनी मधुर वाणी से सबका मन मोह लिया । उन्होंने नारी की महता पर ज़ोर दिया और डॉक्टर गंगू जी के कहे शब्द पुरन्धिः पर भी ज़ोर दिया । उन्होंने कहा कि प्रधान जी ने एक शब्द को लेकर बहुत कुछ कहा। मन्त्री जी ने कहा कि यदि नारी विदुषी है, और घर में नौकर-चाकर है, तो क्या वह चाय नहीं बना सकती। शिक्षा मंत्रालय को सम्भालने वाली नारी ने इस बात पर भी ज़ोर दिया कि नारी चाहे कितने ऊँचे पद पर हो, उसे गृह के काम-काज में हाथ बटाना भी चाहिए।

आगे पंडिता लीलामनी करीमन जी ने अपने सन्देश में गृहस्थ जीवन की चर्चा की। विवाह संस्कार के मन्त्र -

ओं समञ्जन्तु विश्वे देवाः समापो हृदयानि नौ ।
सं मातरिश्वा सं धाता समु देष्ट्री दधातु नौ ।।

को लेकर अपना सन्देश दिया । कहने को तो पति-पत्नी संकल्प लेते हैं कि जैसे दो लोटे जल एक लोटे जल में मिलकर एक हो जाता है, वैसे ही आज से दोनों एक हो जायेंगे पर क्या दोनों इस संकल्प को जीवन भर निभाते हैं। यदि निभाते तो जीवन में आज कोई समस्या पैदा नहीं होती । तालाक़ की समस्या-घर-गृहस्थी का टूटना आत्म-हत्या आदि नहीं होती। विवाह बन्धन में प्रवेश करने से पहले पति-पत्नी को अपनी-अपनी ज़िम्मेदारी का एहसास होना चाहिए, जिससे आगे चलकर कोई काठिनाई न हो ।

महिला मण्डल की प्रधाना श्रीमती धनवन्ती रामचरण जी नारी सम्बन्धित अच्छी-अच्छी बातें कहीं। उन्होंने

बताया कि महिला को घमण्डी नहीं होना चाहिए । उसे अपनी मर्यादा में रहकर अपने कर्तव्यों का पालन करना है, तभी उनकी शोभा बढ़ती है ।

अन्त में समाज की प्रधाना ने धन्यवाद सम्पन्न किया और जलपान से सबका सत्कार किया गया। बीच में पंडिता अंजनी महिपत ने मुख्य अतिथियों का स्वागत शॉल और गुच्छों से किया और उपस्थिति के लिए सबको धन्यवाद किया ।

ओ३म्-ध्वज का महत्व

बिष्णुदेव बिसेसर

यह ओ३म् का झण्डा आता है,
सोने वालो जाग चलो ।
यह सूर्य वेद का चमका है,
यह काम यहाँ क्या तम का है ।

यह प्रोफ़ेसर पंडित वासुदेव विष्णुदयाल का सर्वप्रिय गीत था, जिसने उस ज़माने में अनगिनत लोगों को जगा दिया था। जो जागे थे, वे आज तक फिर से सोये नहीं । सेवा-समिति के वीर सैनिकों के जीवन में यह जागृति आ गई थी, क्योंकि वे परमात्मा के मुख्य नाम – ओ३म् का झण्डा फहराते थे। वेदों को मानने वालों और न जानने वालों ने भी ओ३म् नाम के उच्चारण में आवाज़ से आवाज़ मिलाने की कसम खा ली थी। वही ओ३म् का झण्डा आज भी हमारे घर-मन्दिर पर लहरा रहा है।

एक बार भारत के कुछ साधु-सन्तों ने एक भव्य कार्यक्रम के अवसर पर 'तिरंगे झण्डे' को भी नीचे करके ऊपर ओ३म् का झण्डा फहराया दिया था, इसलिए कि सबसे ऊँचा परमात्मा का झण्डा फहराना चाहिए । उससे लोगों ने यह बात मान ली थी, और सभी ने ओ३म् का झण्डा सबसे ऊपर फहरा दिया था ।

यह झण्डा हम हिन्दुओं व आर्यों का चिह्न है । हमें भय या शर्म से नहीं, बल्कि अति गर्व से अपने घर और दुकान की छत पर इसे फहराना चाहिए तथा अपने पड़ोसियों से भी कहना चाहिए कि यह अपने पूजा-स्थल पर भी अवश्य फहराएँ। मेरे गाँव में कई लोग उड़ाते हैं, चाहे दुकान हो या घर – 'ओ३म्' का झण्डा क्यों न फहरे ? एक बार आज़मा कर देखें आपके घर-परिवार में सुख-समृद्धि और धन का आगमन होगा। यह कोई अन्धविश्वास नहीं, बल्कि परमपिता परमेश्वर के प्रति हमारी श्रद्धा का प्रतीक है । वही तो सब कुछ देता है। यह ओ३म् का ध्वज देखकर लोग सर झुकाते हैं और समझ जाते हैं कि यहाँ श्रेष्ठ लोग बसते हैं ।

मुझे याद है, एक बार ज़िला परिषद् (District Council) का एक आर्य समाजी का बेटा प्रधान बना । उसने परिषद् के दफ़्तर में महर्षि दयानन्द की तसवीर लगाई और जब तक वह प्रधान बना रहा, ओ३म् का झण्डा फहराता रहा।

हमने 'वैदिक भजन माला' नाम से एक सी.डी. बनाई है । उस सी.डी. में एक भजन आता है – 'ओ३म् नाम का झण्डा प्यारा'। यह अनेक टी.वी. कलाकारों का भजन है, जैसे रमेश सनतोकी, च० जिबोधन, पण्डिता जहाल, कल्याचेटी आदि। यह भजन आज देश-विदेश में सुना जाता है।

डॉ० उदय नारायण गंगू जी आर्य सभा मॉरीशस का प्रधान-पद और श्री सत्यदेव प्रीतम जी महा मन्त्री का पद सम्भाल रहे हैं । चलो एक पन्थ दो काज करें । मैं आपके निर्देशन में यह लेख लिख रहा हूँ और निवेदन कर रहा हूँ कि अब सत्यार्थप्रकाश का मास बीत गया और वेद मास आ रहा है । सभी घरों और आर्य मंदिरों में फिरसे पंडित वासुदेव विष्णुदयाल जी की भाँति नई चेतना, नया जागरण लाने की कोशिश करें, ताकि सोने-पे-सुहागा हो जाये – ओ३म् का झण्डा भी फहराया जाए और वेदों की डंका भी बजाई जाए ।

आज जब, सब मिलकर हमारे लोगों को गुमराह कर रहे हैं, तो हम अपने पथ-प्रदर्शक दयानन्द जी महाराज को और पं० विष्णुदयाल जी को कैसे भूल गये हैं । लगातार धर्म परिवर्तन हो रहा है। अंधविश्वास की ओर लोग दौड़ रहे हैं। वेदों की राह पर चलने की कोशिश करें, ताकि मध्यपान, तम्बाकू और चरबी खाने-पीने में करोड़ों रुपये खर्च न हों ।

आज हमारे पास कई सौ वैदिक पुरोहित हैं, कई सौ शाखा समाज हैं, कई समितियाँ हैं। वैदिक परिवार युवकों में जागरण लाने के लिए एक प्रण लें। वैदिक पुरोहित जहाँ पर भी सत्संग करें, वहाँ एक झण्डा अवश्य फहराएँ, दान दें, 'आर्योदय' पत्र के ग्राहक बनाएँ और एक सत्यार्थप्रकाश खरीदने की माँग करें, इसका लाभ बतलायें। सभा की ओर से सभी शाखा समाजों में परिपत्र भेजें कि हर एक सदस्य के घर पर ओ३म् का झण्डा हो । कहते

हैं – सौ हाथ से कमाओ अपने धर्म के लिए हज़ार हाथों से दान दो । आप उन लोगों को ओ३म्-ध्वज का दान करें और इस ध्वज का महत्त्व बतायें ।

यदि आप सुख चाहते हैं, यदि चाहते हैं कि आपके बच्चे आपकी आज्ञा का पालन करें तो अनिवार्य रूप से प्रतिदिन उनसे ओ३म् की महिमा का गान कराइये। न हो सके तो कम-से-कम प्रति मास एक बार अपने घर पर यज्ञ-सत्संग अवश्य करें। हम अपने परिवारों को, अपने धर्म-समाज को एवं अपने स्वर्ग – जैसे देश को बचायें । परमात्मा की ओर अग्रसर होवें। ओ३म् का झण्डा ऊँचा रहे ।

पारिवारिक यज्ञ

एस. प्रीतम

हम अक्सर सामाजिक यज्ञ में सम्मिलित होते हैं, कभी-कभी पारिवारिक यज्ञ होता है। शनिवार दि० १६ जून २०१७ को प्रातःकाल १०.३० बजे हम आमंत्रित थे श्रीमती डाक्टर शशि दुखन के गृह पर एक बहद् यज्ञ में। उनके परिवार के सदस्यों के साथ आर्यसभा की ओर से प्रधान डॉ० उदयनारायण गंगू, महा सचिव सत्यदेव प्रीतम, दिल्ली भारत से आये हुए आचार्य विजय भूषण और उनकी धर्मपत्नी श्रीमती डॉ० सुषमा जी आर्या उपस्थित थे ।

यज्ञ सम्पन्न हुआ आर्यसभा की पुरोहित श्रीमती चमन द्वारा। यज्ञ और भजन-कीर्तन के पश्चात् आचार्य विजय आर्य द्वारा साज-संगीत पर एक मनमोहक भजन हुआ, जिसे उपस्थित लोगों ने खूब सराहा। श्रीमती सुषमा द्वारा सारगर्भित भाषण हुआ।

समारोह सम्पन्न से पहले आर्यसभा के प्रधान और मंत्री द्वारा भाषण हुए, जिसके दौरान दोनों वक्ताओं ने यज्ञ करने की वजह पर प्रकाश डालते हुए श्रीमती शशि दुखन की सफलता के लिए बधाई दी। याद रहे कि शशि जी ने एम.ए. करने के बाद पी.एच.डी. की उपाधि पाई। उसकी सहपाठिनी श्रीमती शान्ति मोहाबीर ने भी पी.एच.डी. की उपाधि पाकर डाक्टर बन गयी।

डॉ० रुद्रसेन नीऊर ने रविवार दिनांक १८ जून २०१७ को दिन के १२.०० बजे अपने नये निर्मित घर पर अपनी ८३ वीं वर्षगाँठ मनायी। मौके पर यज्ञ सम्पन्न किया आचार्य ब्रह्मदेव मकूनलाल ने। आर्यसभा की ओर से उपस्थित थे – प्रधान डॉ० उदयनारायण गंगू, महामंत्री सत्यदेव प्रीतम, उपप्रधान बालचन्द तानाकूर, उपकोषाध्यक्ष श्री राजेन रामजी और आर्य सभा के मानेजर श्री राज सोब्रण।

यज्ञोपरान्त सभी उपस्थित लोगों को भोजन से सत्कार किया गया ।

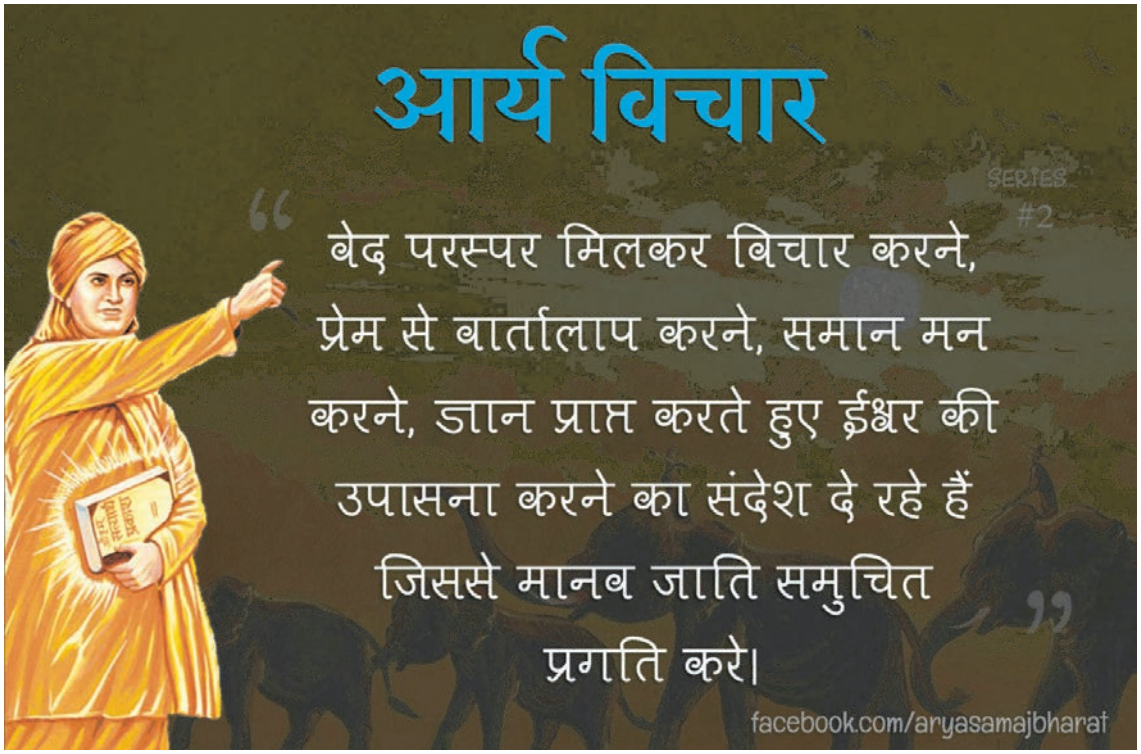

Pailles Arya Samaj

Satyārtha Prakāsh Month: Sunday 25 June 2017

The weekly satsanghs of every third Sunday at the Pailles Arya Samaj is conducted by Yogi Bramdeo Mokoonlall. Exceptionally the month of June, he covered the Satyartha Prakash on the last Sunday, at the request of some members.

During Yajna he recited a few mantras which are source of inspiration to our youngsters who will shortly be having their second term examinations as well as some mantras praying for the good health of all, especially during the transition of seasons which leaves us vulnerable to various health problems like flu and cold.

Elaborating on the Satyartha Prakash of Maharishi Dayanand Saraswati, he quoted the preface as the key to open the doors to a better understanding towards a thorough study of this masterpiece and indeed, the master key to eliminate misunderstanding in life and succeed in whatever field we choose as profession. These are the four elements necessary to convey a complete sense to the writings of any author or the speech of any person :

(1.a) **Akankasha** consists in entering the spirit of the speaker or the author.

Example : Micro in sound refers to an apparatus that sends the sound to an amplifier for onwards transmission to a loudspeaker. Micro in terms of particle analysis refers to very small particles. Micro in economics refers to the individual budget.

(1.b.) **Yogyata** in the fitness of compatibility of sense.

Example : When it is said "water irrigates" there is only a mutual connection between the objects signified by the words. Irrigation techniques may differ but it is only water that is used for irrigation, not pesticides, herbicides, etc.

(1.c) **Asatti** consists in regarding or speaking words in proper sequence, i.e., without detaching them from their context.

Example : *Wait, not Kill and wait not*, *kill* confers opposite instructions.

(1.d) **Tatparya** is to give the same meaning to the words of a writer or a speaker which he intended that they should convey.

Example : Nava kambala which means new blankets or nine blankets. During a distribution we give one new blanket to everyone due to receive a new blanket and not nine blankets to each individual.

The next set of words are from chapter 9 of the Satyartha Prakash :

(2.a) **Shravana** which is listening skills. In fact it implies the attentive application of the five senses of perception during the acquisition of knowledge.

(2.b) **Manana** or contemplation on the context and words used to explain the subject or topic. This enhances memory power and swift recalling of the knowledge whenever needed.

(2.c.) **Nididhyaasana** is the process whereby we analyse the arguments for and against on a particular topic. It allows us to come to better conclusions and eventually better course of actions in life.

(2.d) **Shaakshaatkaara** is the realisation of the actions, that is - the fruits of our efforts.

These are eternal recipes for success in all spheres of life, be it learning, sports, jobs, etc. A regular practice over a long period of time coupled with passion and dedication will bring our efforts to fruition.

To a question from the audience on the learning of languages, Yogi Bramdeo Ji emphasised on the learning of the mother tongue as a first step in the learning process as it empowers the child to grasp the language structure, grammar, etc. which would serve him to master any other language …if not we would fall in the context when words in different languages have different meanings. Wrong learning, and worse the mixing of languages will lead to misunderstandings. Example: Lait in French means milk, lé in creole means desire and can also mean milk, ले (lé) in Hindi means to take … similar pronunciation & different meanings. Language is best taught in that particular language.

The members expressed their thanks to Yogi Bramdeo for his usual enlightening talks, his simplicity in putting forward his topics, and rendering understandable to all …children, youngsters, adults and senior citizens, be they literate or not on the topic.

This is the first time that the audience at the Pailles Arya Samaj got an overview of the practical applications of the teachings of the Satyartha Prakash outside the 'framework of religious matters'. Simple words, total eight (8) which are the master key to success in life … both the material and spiritual aspects of life as these words applied in real life keeps us on the two rails of the one-and-same railway track.

Reshma Sookar
Secretary

जीवन-यात्रा । *ब. तानाकूर*

हमारा जीवनकाल शैशव अवस्था से आरम्भ होकर वृद्धावस्था में जाकर समाप्त होता है । प्रत्येक अवस्था में शरीर का परिवर्तन होना प्रकृति का नियम है, इस अटूट नियम को कोई बदल नहीं सकता है। जन्म लेने के बाद शैशवावस्था में एक शिशु का शरीर कोमल, सुकुमार और मन-भावक होता है। बाल्यावस्था में उसके शरीर में वृद्धि होने लगती है। उसकी बाल्य लीला अति रोचक होती है। उसका शारीरिक, बौद्धिक और मानसिक विकास होने लगता है। बचपन में बच्चे अपने परिवारों में अति प्रिय माने जाते हैं ।

बाल्यावस्था पार करके बच्चे तरुणावस्था में प्रवेश करते हैं। वे जवान होते हैं । उनका शरीर बल-युक्त होता है, वे तेजस्वी, सुडौल और सुन्दर दीखते हैं। इसी अवस्था में वे शिक्षित होकर अनुभवी होने लगते हैं, और अपने गुण-कर्म तथा अनुभव के आधार पर उन्नतिशील होते हैं। यह अवस्था जीवन-काल की मुख्य अवस्था मानी जाती है। इसी काल में भावी जीवन की नींव डाली जाती है, क्योंकि जवानी जाकर फिर कभी नहीं आती है ।

युवावस्था में अपने ज्ञान, अनुभव और पुरुषार्थ द्वारा लोकप्रिय होने के बाद इंसान वृद्धावस्था में कदम रखता है । बुढ़ापे में शरीर शिथिल होकर जीर्ण हो जाता है, निर्बल होकर रोग-ग्रस्त हो जाता है । वृद्धावस्था ही हमारे जीवन की सबसे कठिन अवस्था है, जिसे व्यतीत करने के लिए हमें अपने परिवारों, सहयोगियों तथा मददगारों की आवश्यकता होती है । दूसरों के प्रेम, सहयोग, सेवा तथा सहानुभूति के बिना वृद्ध जनों के जीवन में दुख, वेदना और नीरसता भर आती है । वे असहाय होकर बड़ी कठिनाई से अपने जीवन की शाम गुज़ारते हैं ।

भाग्यशाली वे वृद्ध जन होते हैं, जिन्हें आवश्यकता-अनुकूल सहयोग अपने रिश्तेदारों तथा पुत्र-पुत्रियों से प्राप्त होता रहता है । उधर अभागे वृद्ध वे होते हैं, जिन्हें किसी प्रकार की सहायता नहीं मिल पाती है। वे कई प्रकार के कष्टों को झेलते हुए दुखद परिस्थितियों का सामना करते रहते हैं। किसी कवि ने क्या खूब फ़रमाया है –

ये शामे ज़िन्दगी, इसे हँसके गुज़ारिए ।
रास्ता है बड़ा कठिन, मगर हिम्मत न हारिए ।

वृद्धावस्था हमारी जीवन यात्रा का अन्तिम भाग होता है। इस यात्रांश को बड़ी कठिनाई से पार करना पड़ता है, जीवन की लड़खड़ाती गाड़ी को किसी न किसी तरह अन्तिम साँस तक खींचना ही पड़ता है । ऐसी गम्भीर अवस्था में वृद्ध जनों की खूब सेवा करनी चाहिए, उनकी आवश्यकताएँ पूर्ण करनी चाहिए, उनका मान-सम्मान करना चाहिए और अपने देव-तुल्य माता-पिता तथा बुज़ुर्गों का आशीर्वाद लेना चाहिए ।

ध्यान रहे कि एक दिन हम सभी वृद्ध होंगे । हमारी वृद्धावस्था भी दूसरों की सहायता पर आधारित होगी । अगर हम अपने वृद्ध दादा-दादी, माता-पिता, गुरुजनों को ठेस पहुँचाएँगे, उन्हें दुखित करेंगे या तिरस्कृत करेंगे तो वैसे ही हमारे बच्चे हमारे प्रति बुरा व्यवहार करेंगे, क्योंकि वे अनुकरणशील होते हैं। अतः हमारा परम कर्त्तव्य है कि हम नित्य अपने बुज़ुर्गों को प्रसन्न रखें, अपने प्रेम-सहयोग द्वारा उनकी अन्तिम यात्रा को खुशहाल बनाएँ। उनके आशीर्वाद से हमारा जीवन सुखमय होगा ।

आज हमारे देश में लगभग दो लाख वृद्ध जन हैं, जिनकी मदद करने में सरकार ने पूरी व्यवस्था की है । आर्यसभा की ओर से वयोवृद्धों की सेवा-निमित्त छः आश्रम स्थापित किए गए हैं। विकलांग बच्चों की मदद की जा रही है । इन आश्रमों में हमारे बूढ़े, रोगग्रस्त, असहाय लोग सहायता प्राप्त कर रहे हैं, फिर भी कितने वृद्ध जीवी अकेले घरों में तड़पते नज़र आ रहे हैं, जिन लोगों ने पूरे जीवन में अपनी संतानों के हित में खून-पसीना बहाया, उनकी मदद करने से उनके जवान बच्चे मुँह फेर रहे हैं। यह कितने दुख की बात है ।

हम अपने सभी भाई-बहनों से निवेदन करते हैं कि आप वृद्ध जनों को इतना आनंद और सुख प्रदान करें कि वे अपनी अन्तिम घड़ी हँसते हुए पूर्ण करें – उनकी जीवन-यात्रा सफलतापूर्वक पूर्ण हो ।

बधाई एवं कोटिशः धन्यवाद

डॉ० उदय नारायण गंगू, सी.एस.के.,जी.ओ.एस.के.,आर्य रत्न - प्रधान आर्यसभा

स्वनामधन्य बाल गंगाधर तिलक जी ने कहा था – 'स्वाधीनता मनुष्य का जन्मसिद्ध अधिकार है ।' हमारे राजनीतिज्ञों ने भारतीय स्वतन्त्रता-संग्राम-सेनानियों के पद-चिह्नों का अनुसरण करके पराधीन मॉरीशस को ब्रिटिश उपनिवेशवाद के चंगुल से मुक्त किया। १२ मार्च २०१८ को यह देश अपनी स्वतन्त्रता की अर्धशती मनाने जा रहा है। इस स्वतन्त्रता-प्राप्ति में हमारे पूर्वजों के संघर्ष को भुलाया नहीं जा सकता। उन्हें स्वतन्त्रता-विरोधियों से लोहा लेना पड़ा था।

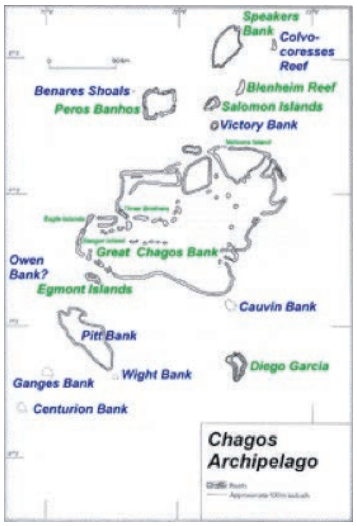

आज मॉरीशसवासियों की प्रसन्नता की सीमा नहीं रही, जब पूर्व प्रधानमन्त्री एवं वर्तमान परामर्शदाता मन्त्री (Mentor Minister) सर अनिरुद्ध जगनाथ जी, GCSK, KCMG, QC, MP, PC के अथक प्रयास से शागोस द्वीप बहुल सागर (Chagos archipelago) पर संयुक्त राष्ट्र संघ के चौरानबे सदस्य देशों ने मॉरीशस के अधिकार का समर्थन किया। इस विजय के लिए परामर्शदातामन्त्री जी को बधाई और मॉरीशस के सभी मित्र देशों को कोटिशः धन्यवाद।

विश्व में आतंकवाद का खतरा चहुँ ओर मंडरा रहा है। हिन्द महासागर भी इस खतरे से बचा नहीं है । हिन्द महासागर का क्षेत्रफल ७३.५६ मिलियन वर्ग किलोमीटर (73.56 million sq km) है। इस महासागर में ड्रग्स के व्यापारी, समुद्री डाकू और आतंकवादी चक्कर काटते रहते हैं ।

भारत सरकार को हमें अशेष धन्यवाद करना है, जिसने शागोस के हज़ारों मील के सागर को आतंकवादियों और विनाशकारी शक्तियों से बचाने का संकल्प लिया है । भारत के प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी ने मॉरीशस को भारत का छोटा भाई कहा है । सचमुच भारत बड़े भाई की भूमिका का निर्वाह कर रहा है। हम भारतीय प्रधानमन्त्री को उनकी महती उदारता के लिए आभार प्रकट करते हैं ।

Mauritian team with representatives of supporting countries

डॉ० चिरंजीव भारद्वाज आश्रम का शिलान्यास

एस. प्रीतम

रविवार दि० २५.०६.२०१७ को प्रातः दस बजे आर्यसभा के पुरोहित-पुरोहिताओं द्वारा यज्ञ से डॉक्टर चिरंजीव भारद्वाज आश्रम के विस्तार के लिए शिलान्यास-विधि प्रारम्भ हुई । तत्पश्चात् कार्यक्रम का दूसरा भाग प्रस्तुत किया गया । डॉ० चिरञ्जीव आश्रम कमिटि के प्रधान श्री धर्मदेव दोमा और श्रीमती धनवन्ती रामचरण द्वारा उपस्थित लोगों को स्वागत किया गया ।

मंत्री पृथिवीराज रूपण और मन्त्री जोज़ेफ़ एचियेन सिनाताम्बू ने पहले अपने संदेशों में आर्यसभा द्वारा किये जा रहे अच्छे कार्यों का उल्लेख किया। फिर दोनों मंत्रियों ने आगे बढ़कर शिलान्यास पट का अनावरण किया - आर्यसभा के प्रधान, मंत्री तीनों उपप्रधान, शेष सभी अन्तरंग सदस्यों और चन्द दूर-करीब से आए लोगों के बीच ।

पुनः शेष कार्यक्रम को सत्यदेव प्रीतम ने पेश किया। बारी-बारी से श्रीश्री श्री डॉ० उदयनारायण गंगू, हरिदेव रामधनी, डॉ० विनोद मिश्र, आर० पी० सिंह आदि ने सन्देश प्रस्तुत किये ।

समारोह के अन्त में विजय रामचर्ण ने अपिल करते हुए बताया कि ५ से अधिक लोगों ने ५०,००० रुपये दान में दिये और शेष लोगों ने अपनी शक्ति के मुताबिक दान दिये ।

सभा विसर्जन के बाद सभी उपस्थित लोगों को भोजन से सत्कार किया गया ।